सम्पादकीय

चुनाव और आर्य जन

आजकल भारत का वायुमण्डल चुनावमय हो रहा है। अन्य सब प्रकार की चर्चाओं को चुनाव की चर्चा ने दबा दिया है। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में प्रायः ऐसे पत्र आते रहते हैं जिनमें पूछा होता है कि देश के राजनैतिक चुनाव में आर्यजनों का क्या कर्त्तव्य है ? निजी तौर पर भी आर्यजन यह प्रश्न करते रहते हैं। आवश्यक प्रतीत होता है कि इस विषय में कोई स्पष्ट और निश्चित निर्देश दिया जाय। चुनाव सिर पर है इस कारण प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर के लिए आर्यजगत् की अधीरता स्वाभाविक ही है।

आर्यजगत् को यह समाचार विदित हो ही चुका है कि राजार्य-सभा का संगठन हो गया है। लगभग ३५ वर्षों की चर्चा के पश्चात् सार्वदेशिक अन्तरंग सभा ने अपने गत अधिवेशन में राजार्य सभा की नियमावली स्वीकार कर ली थी। इस बीच में नियमों के अनुसार उसके सदस्यों का निर्वाचन भी हो गया है। राजार्यसभा के प्रथम अधिवेशन में वैधानिक कार्यों के पश्चात् सबसे मुख्य कार्य यही होगा कि वह चुनाव के सम्बन्ध में आर्यों के लिए निर्देशात्मक घोषणा-पत्र प्रकाशित करे।

इस प्रसंग में आर्यजनों का ध्यान कुछ तथ्यों की ओर खेंचना उपयुक्त है। आर्यसमाज का राजनीति के उन मूल सिद्धान्तों पर विश्वास हैं जिनका वेद के आधार पर महर्षि दयानन्द ने प्रतिपादन किया है। प्रजा द्वारा शासक तथा मन्त्रियों का चुनाव देश का प्रदेशों और मण्डलों में विभाजन और प्रजा मात्र को न्याय और सुख के समान अधिकार आदि ऐसे सिद्धान्त जो आज देश में सर्वमान्य हो रहे हैं वे अपने विशुद्ध रूप में वेद के अनुकूल हैं। यही कारण है कि अन्य अनेक गौण विषयों पर मतभेद रहते हुए भी सम्पूर्ण आर्य जाति ने बहुत आसानी से उन्हें स्वीकार कर लिया है। यही कारण है कि प्रत्येक आर्य नरनारी ने भारतीय गणतन्त्र के आधार भूत सिद्धान्तों को और उनके अनुसार बने हुए स्वतन्त्र संविधान को अंगीकार कर लिया है। स्पष्ट है कि चुनाव में कोई आर्य ऐसी पार्टी अथवा ऐसे व्यक्ति के पक्ष में सम्मति नहीं दे सकता जो गणतन्त्र राज्य का विद्रोही अथवा विरोधी हो। देश के स्वतन्त्र सम्विधान के प्रति वफादारी प्रत्येक आर्य नरनारी का कर्त्तव्य है।

दूसरी स्मरण रखने योग्य बात यह है कि धर्म का सबसे प्रथम और आवश्यक अंग ईश्वर विश्वास है। यह निर्विवाद सत्य है कि जिस व्यक्ति में सच्चा ईश्वर विश्वास नहीं वह उस जहाज की तरह है जिसमें दिग्दर्शक यन्त्र न हो। उसके भटक जाने की बहुत अधिक संभावना बनी रहती है। किसी भी उम्मीदवार के लिए मत देने से पूर्व आर्य मतदाता को यह देख लेना चाहिए कि उस उम्मीदवार के जीवन मे आस्तिकता का अंश है या नहीं ? नास्तिक को राय देना अपने मत-पत्र को विरोधी उम्मीदवार की सन्दूकची में मत-पत्र डालने से भी अधिक बुरा है।

तीसरी स्मरणरखने योग्य बात यह है कि विलासी और चरित्र-हीन तथा छूआछूत जातपात आदि रूढ़ियों को मानने वाले व्यक्ति के पक्ष में केवल इसलिए सम्मति देना कि वह हमारा सम्बन्धी है अथवा परिचित है या उससे किसी लाभ की आशा है महापाप है। ऐसा मनुष्य किसी भी प्रलोभन से देश को बेच सकता है।

चौथा विचार जिसे भारतीय मतदाताओं को

सदा सामने रखना चाहिए यह है कि वे उन्हीं लोगों के पक्ष में सम्मति दें जिनका भारतीयता और भारतीय संस्कृति पर दृढ़ विश्वास हो। जो व्यक्ति अपने देश की सात्विक परम्पराओं पर विश्वास नहीं रखते और अपने देश को अन्य किन्हीं देशों का मानसिक दास बनाना चाहते हैं वे सच्चे मार्गदर्शक नहीं बन सकते। जिनके मन में भारत के प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास के लिए आदर का भाव नहीं है, जो देश के धर्म, साहित्य और इतिहास की एकमात्र निधि संस्कृत भाषा से घृणा करते हैं अथवा गोरक्षा आदि की भावनाओं को उपहास योग्य मानते हैं वे भी भारतीय जनता के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हो सकते।

आर्यजनों का दृष्टिकोण सदा विशाल होना चाहिए। उन्हें ऐसे किसी कार्य में सहयोग न देना चाहिए जिससे देश की स्वाधीनता तथा एकता पर आघात पहुंचे। सच्चा आर्यत्व साम्प्रदायिकता या क्षुद्र हृदयता से कोसों दूर है। आर्यों की दृष्टि विशाल होनी चाहिए। वह केवल देश की सीमाओं तक ही परिमित नहीं रह सकती उसे तो विश्व-हित का भी ध्यान रखना होगा। इस कारण जहां आर्यजनों का दृष्टिकोण अत्यन्त उदार होना चाहिए वहां साथ ही कुछ मूल सिद्धान्तों पर दृढ़ता से जमे रहना भी अत्यन्त आवश्यक है।

ये मैंने कुछ सामान्य विचार रखे हैं जो आर्यजनों को भिन्न भिन्न पार्टियों के उम्मीदवारों में से अपने समर्थन के योग्य व्यक्तियों के चुनाव में सहायक बन सकते हैं। अधिक विस्तृत पथ-प्रदर्शन के लिए उन्हें राजार्य सभा के घोषणा-पत्र की प्रतीक्षा करनी चाहिए। —इन्द्र विद्यावाचस्पति

पंजाब की हिन्दी समस्या

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में पंजाब की भाषा समस्या के सम्बन्ध में बहुत से पत्र आये हैं जिन में पूछा गया है कि उस समस्या को हल करने के लिये क्या किया जा रहा है। इस प्रसंग में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक पत्र प्राप्त होने पर सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने एक उपसमिति बनाई थी जिसके सुपुर्द पंजाब सरकार तथा अन्य संबद्ध महानुभावों में बातचीत करके संतोषजनक निर्णय पर पहुंचने का काम किया था। उसके पश्चात् पंजाब के मुख्य मंत्री श्री प्रतापसिंह कैरों से पत्र व्यवहार किया गया। मुख्य मंत्री ने कुछ और सिक्ख नेताओं के नामों का सुझाव दिया जिनसे बातचीत करना उपयोगी होगा उनमें से कुछ महानुभावों से चर्चा आरम्भ हो चुकी है। बातचीत का रुख निराशाजनक नहीं हैं। इस बीचमें चुनाव का वातावरण होजाने के कारण परस्पर विचार विनिमय का सिलसिला शिथिल पड़ गया है। वर्तमान उत्तेजना के शान्त होते ही बातचीत फिर आरम्भ हो जायेगी।

कुछ सज्जन भाषा के प्रश्न का सहारा लेकर समाचार पत्रों में व्यक्तियों और संस्थाओं के विरुद्ध उग्र आन्दोलन कर रहे हैं। ऐसे हानिकारक प्रयत्नों से कोई लाभ होना तो संदिग्ध है, पंजाब प्रांत की राजनीतिक परिस्थितिमें उलझनें पैदा हो जाना अवश्यंभावी है। जो विचार विनिमय या समझौते के मार्ग में विश्वास नहीं रखते और एकदम संघर्ष द्वारा सफलता प्राप्त करने की आशा रखते है उन्हें रोकने वाला कौन है? वे अलग संगठन द्वारा मनचाही कार्यवाही कर सकते हैं। आर्य समाज तो संघर्षात्मक कदम तभी उठायेगा जब कोई शान्ति पूर्ण उपाय शेष न रहेगा। सत्याग्रह का सिद्धान्त यही है। आर्य समाज जैसी प्रभाव सम्पन्न संस्था को प्रत्येक आन्दोलन की आग में बिना सोचे समझे झोंक देना उचित नहीं है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्रीयुत स्वामी आत्मानन्द जी ने जो नौ सूत्रीय कार्यक्रम प्रचारित किया है उससे जनता का सही मार्ग प्रदर्शन होता है। आर्यजनों को उत्साह पूर्वक उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करना चाहिए।

— इन्द्र विद्यावाचस्पती

❀ सम्पादकीय टिप्पणियां ❀

सन्तति निरोध

सन्तति निरोध के सम्बन्ध में आर्य समाज की स्थिति सुस्पष्ट है। आर्य समाज ब्रह्मचर्य और संयम पूर्वक आवश्यकतानुसार सन्तान निरोध का समर्थक और पुष्ठ पोषक है जिसके लक्ष्य में स्वास्थ्य की रक्षा और श्रेष्ठ सन्तान की उत्पत्ति रहती है। दूसरे शब्दों में आर्य समाज सन्तति निरोध को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखता है। यही वैदिक परम्परा है और रही है।

कृत्रिम उपायों से सन्तति निरोध महाभ्रष्ट निरोध है और कामुकता तथा उससे उत्पन्न होने वाली अनेक बुराइयों की सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। इससे जहां स्वास्थ्य और नीति को आघात पहुंचता है वहां समाज उत्तम बच्चों की उत्पत्ति से भी वंचित हो जाता है जिससे धीरे२ जातियां और संस्कृतियां नष्ट हो जाती हैं। जिस देश ने कृत्रिम उपायों से सन्तान निरोध का आश्रय लिया उसका विनाश हो गया। यूनान इसका ज्वलंत उदाहरण है। इस युग में फ्रान्स आदि देशों के सांस्कृतिक गौरव और आचारिक दिवालिएपन के लिये यह उपाय अधिकांश में जिम्मेवार है। इस बात को उन्हीं देशों के मनीषीजन अनुभव करते और इस सत्य का प्रकाश करते हैं।भारत भी जनसंख्या के नियमन और लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने के उपाय के रूप में कृत्रिम साधनों के द्वारा संतति निरोध का आश्रय ले रहा और इतिहास की चेतावनी की उपेक्षा कर रहा है। न जाने इस भूल की हमें कितनी मँहगी कीमत चुकानी होगी। भारतीय आदर्शों और उत्तम परम्पराओं से प्रकाश ग्रहण करने और उन पर गर्व करने वालों को तो बड़ी निराशा होगी। इस विषय में मिस मेबुल ई० सिम्पसन (अमेरिका)की चेतावनी ध्यान देने योग्य है। उन्होंने कई वर्ष हुए अपने देश में कृत्रिम साधनों के द्वारा संतति निरोध की गति और उसके दुष्ट परिणामों पर भय एवं खेद प्रगट करते हुये महात्मा गांधी को लिखा था "यदि भारत वर्ष कृत्रिम साधनों के द्वारा संतति निरोध के लिये पश्चिम का अनुकरण करेगा तो निश्चय ही वह बच्चों के प्रति प्रेम और माता पिता के प्रति आदर भाव के अपने दो बहुमूल्य हीरों से वंचित हो जायेगा। महात्मा जी ने इस दूषित उपाय के विरुद्ध बड़ा साहित्य दिया और डटकर इसका विरोध किया। दुःख है उन्हीं के अनुयायी तथा प्रशंसक राजकीय स्तरपर उन उपायों का प्रचार और प्रसार करके उनकी भावना और यत्न के साथ खुलकर खिलवाड़ कर रहें हैं। कृत्रिम उपायों के द्वारा सन्तति निरोध का प्रचार करना सांस्कृतिक आत्म-हत्या है। आर्य समाज के नाम पर इस प्रकार का प्रचार करना या उसमें सहायक होना सामाजिक एवं सांस्कृतिक द्रोह है जो एक क्षण के लिये भी बर्दाश्त न होना चाहिए।

यह बड़े दुःख की बात हैं कि आर्य समाज के कुछ पत्र और प्रभावशाली सदस्य कृत्रिम साधनों के प्रचार की रौ में बह गये हैं। उनका तर्क है कि 'संयम पूर्वक वैज्ञानिक उपाय अधर्म्य नहीं है कम बुराई चुनी जा सकती है। यदि गर्भ की स्थिति हो जाने और बच्चे के जन्म से माता की मृत्युका भय उपस्थित हो तो इस प्रकार का उपाय आवश्यक हो जाता है। इनके प्रयोग से संयम की रक्षा का होना वा ऐसी कल्पना कर लेना बड़ा भारी भ्रम है। संयम और कामुकता की खुली छुट्टी ये दोनों बातें साथ २ नहीं चल सकतीं। इसके अतिरिक्त ये उपाय चिकित्सकों द्वारा विघातक सिद्ध किए जा चुके हैं। यहां कुछ सम्मतियों का दिया जाना उपयोगी होगाः—

'कृत्रिम साधनों के द्वारा संतति निग्रह से

पुरुष और स्त्री के स्नायु मंडल खराब हो जाते हैं।

(श्रीमती डा० मेरीस्टोप्स)

स्त्रियां गर्भाधान रोकने के लिये जिन साधनों का प्रयोग करती हैं उनके विषय में डाक्टरों की सम्मति है कि प्रति सैकड़ा ७५ को हानि पहुंची है। कृत्रिम साधनों से गर्भ रोकने के कारण अकेले पेरिस नगर में एक लाख से अधिक रजिस्टर्ड वेश्याएं हैं। कृत्रिम साधनों से प्रजोत्पत्ति को रोकने का प्रश्न बड़ा गम्भीर है। मैं अपने अवलोकन और अन्वेषण के आधार पर बल पूर्वक कह सकता हूँ कि आज तक इसका प्रमाण नहीं मिला कि इन साधनों से हानि नहीं होती। ज्ञान वान् स्त्री रोग-चिकित्सक कहते हैं कि इन साधनों से शरीर और नीति पर बड़ा घातक प्रभाव पड़ता है। अनुभवी लोग कहते है कि कृत्रिम साधनों के प्रयोग से स्त्रियों को वंध्यापन पागल पन और कैंसर आदि रोग हो जाते हैं। इनके कारण जननेंद्रिय के रोगों का पार नहीं। रोग से पीड़ित हजारों स्त्रियां डाक्टरों का घर ढूंढती फिरती हैं। इन लोगों को नहीं सूझता कि इन साधनों से स्त्रियाँ वन्ध्या बनतीं और पुरुष नामर्द हो जाते हैं। (डा० थर्स्टन)

अत्यधिक प्रजनन से माताओं के स्वास्थ्य और वस्ति प्रदेश के संकुचित होने पर माता के जीवन की रक्षा का प्रश्न विचारणीय है। परन्तु यह वैयक्तिक विषय है। संयम और आपरेशन आदि भी तो इसके उपाय हो सकते हैं यह सम्बद्ध स्त्री पुरुष के स्वयं निर्णय करने का विषय है। उसके सामने दो मार्ग होते हैं। एक कल्याण का दूसरा पतन का। संयम का मार्ग कल्याण का और कृत्रिम उपायों का मार्ग पतन का है।

कोई भी विवेकशील व्यक्ति पतन के मार्ग का अवलम्बन करना पसन्द न करेगा विशेषतः उस दशा में जबकि इनके दुरुपयोग की आशंका हो और ये उपाय अनधिकारियों के हाथों में पहुंच कर गज़ब ढाएं। आज असंख्य अविवाहित लड़कियों (विशेषतः स्कूल और कालिजों की) के पास ये उपकरण विद्यमान् हैं। इस प्रकार इलाज रोग से अधिक भयावह बन गया है। विष की औषधि के रूप में उपयोगिता है परन्तु यदि विष पानका संगठित प्रचार आरम्भ हो जाय तो विनाश की जो अवस्था सामने आ सकती है उसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है माता के जीवन की रक्षा केलिये पेट के बच्चे को भी मारना पड़ जाता है। ये सब वैयक्तिक विषय हैं। सार्वजनिक स्तर पर इनका विचार और प्रसार भयावह है। प्राचीन काल में भी इस प्रकार के उपाय थे परन्तु इनके प्रयोग को सार्वजनिक चर्चा और प्रसार का विषय बनाना अत्यन्त हेय और विघातक समझा जाता था। वे माताएं इतिहास में उच्च स्थान रखेंगी जो अपनी पर्वाह न करके इस बुराई को फैलने न देने की पर्वाह करेंगी।

आवश्यकता इस बात की है किविलासिता और विषयानन्द की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले गहरे अश्लील वातावरण को छिन्न भिन्न किया जाय और संयम एवं सदाचार की प्रवृति जाग्रत करने वाले वातावरण की उत्पत्ति की जाय। राष्ट्रीय पतन का बीज भौतिक सुख की अमर्य्यादित इच्छा में अंकुरित होता है और कृत्रिम साधन इस अंकुर को पल्लवित करने में योग देते हैं। सन्तानोत्पत्तिका भय कामवासना पर अंकुश रखता है। इस अंकुश के उठ जाने और कृत्रिम साधनों के समाज में प्रशस्त बन जाने से अनाचार और विनाश को खुली छुट्टी मिल जाती है। आर्य समाज ने सन्तानोत्पत्ति का आदर्श बताकर और संयम की महिमा स्पष्ट करके विनाश को रोकने का सदैव यत्न किया है। आर्य समाज के कुछ सदस्य यदि इस विनाश को रोकने में सक्रिय

योग न दे सकें तो वे कम से कम इस प्रकार के विनाश में भागीदार तो न बनें।

नवयुवकों की अनुशासन हीनता का इलाज

एक बहिन लिखती है:—

"किसी ऊंट का सुई के नकवे मेंसे निकलना सरल हो सकता है परन्तु किसी युवती का शहर में स्वच्छन्द रूप से निकलना सरल नहीं है। उसके चहुं ओर छाया की तरह जो मूर्तियां घूमती है, उसे जो अशिष्ट आलोचनाएं सुनने को मिलती हैं, जो भयानक मुस्कराहट और भेड़ियों की आवाजें गली मुहल्लों में उसका स्वागत करती हैं उनसे बहुधा उसके हृदय में ग्लानि पूर्ण शर्म और क्रोध उत्पन्न हो जाता है। उस क्षण उसका दुखी हृदय उस पीढ़ी को कोसता है जिसमें पैदा होने का उसका दुर्भाग्य रहा है। यह सत्य है कि आधुनिक सभ्यता एकान्त जीवन के गुणों और छुई मुई जैसी लज्जा शीलता को विशेष महत्व नहीं देती। प्राचीन काल में जो दीवारें पुरुष और स्त्री को एक दूसरे से पृथक रखती थी वे टूट रही हैं। लड़कियाँ भी आज़ादी की उसी हवा में श्वास लेने और उन प्रगतियों तथा व्यवसायों को अपनाने में स्वतन्त्र और समर्थ हो गई है जो मनुष्यों के लिए सुरक्षित थे।

मेरी सखियों ने प्राइवेट बात चीत में यह स्वीकार किया है कि जब कभी कोई पुरुष उनको प्रशंसा की दृष्टि से देखे बिना उनके पास से गुजर जाता है तो उन्हें बड़ा बुरा महसूस (अनुभव) होता है। प्रकृति ने हममें मान का कुछ अन्श रखा है और जब हम अपने बनाव शृंगार और वेष भूषा में अधिक समय और ध्यान लगाने के बाद बाहर निकलती हैं तो हम अनजान में साधारण दृष्टि और मुस्कराहट की अपेक्षा अधिक पारितोषिक प्राप्ति की इच्छा रखती हैं जिससे हमारे अहम्मन्य को सन्तोष प्राप्त हो जाय। यदि हमें वन के फूल की तरह एकान्त में खिलकर मुर्झाना हो और हमारी सुगन्धिका मरु भूमि की वायु में नष्ट हो जाना ही हो तो हममें से कोई भी अपने भाग्य की सराहना न करेगी।

इस पर भी कोई भारतीय लड़की गुड़िया की तरह व्यवहृत होना पसन्द न करेगी। हमारे जीवन के उच्चादर्श हमारे चरित्र में और हमारे रक्त में समाविष्ट हैं। उसकी दृष्टि में अनैतिक व्यवहार बड़ा हेय है।

तब फिर कुछ भारतीय नवयुवक और पुरुष लड़कियों और स्त्रियों के साथ सड़कों पर निर्लज्जता पूर्वक छेड़ छाड़ क्यों करते हैं? क्या वे सचमुच ये सोचते हैं कि गन्दी आवाजें कसने से, लड़की की साड़ी खींचने से, भीड़ भाड़, सिनेमा हाल, बस आदि में शरीर को छूने आदि बेहूदगियों से वे उनके कृपा पात्र बन जायेंगे? गुन्डा गर्दी और चरित्र हीनता का यह निर्लज्ज प्रदर्शन हमारे देश के सुन्दर भविष्य का सूचक नहीं है। इस प्रकार के दुर्व्यवहार का कठोरता से अन्त होना चाहिए।

इस गुन्डा गर्दी के लिये कई बातें जिम्मेवार हैं। अश्लील साहित्य ने हमारे नवयुवकों की नैतिक भावना की जड़ खोखली करदी है जो प्रायः प्रत्येक लड़की को अप्सरा के रूप में देखता है। विदेश के कुछ चलचित्रों ने कालेज के भोले भाले छात्रों को हॉली वुड का उपासक बना दिया है। यही स्थान है जिसके नई पीढ़ी स्वप्न देखती है। पश्चिम की चमकीली जिंदगी के अन्धे अनुकरण से हम उन उच्चादर्शों से दूर चले गये हैं एक मात्र जिनका आश्रय लेने से हम विनाश से बच सकते हैं।

यदि कोई भला आदमी इन गुंडों से लड़कियों की रक्षा करने का साहस करता है तो ये सफेद पोश गुंडे उसे तंग करने का यत्न करते हैं।

अखबारों में आए दिन ये घटनाएँ पढ़ने को मिलती हैं कि जब कि किसी भले आदमी को अपमानित किया गया, वह पीटा गया या उसे जान से मार दिया गया। जब अवस्था इतनी भयंकर हो गई हो तब कोई लड़की अपना पीछा करने वाले लड़कों से बचने के लिए मुकाबला करने का साहस क्योंकर कर सकती है ? सचमुच हम कानून के रक्षकों से ही सहायता और रक्षा की आशा रख सकती हैं। हस्पतालों और कन्या पाठशालाओं के पास घुड़ सवार सिपाही घूमने चाहिएं। यदि बम्बई पुलिस का अन्य सब राज्यों में अनुकरण किया जाय तो नवयुवक गुंडों की प्रगतियों पर कड़ा अंकुश लग सकता है।

परन्तु बहुत कुछ हम लड़कियों के साहस और क्षमता पर निर्भर है। बहुधा अनजान में हम अपने परिपीड़िकों को प्रेरणा दे देती है। यदि हम फैशन की पराकाष्ठा करके जर्क वर्क बनकर और नाखूनों एवं ओठों को रंगों से रंगकर बाहर निकलें और यदि वहां हमारे साथ दुर्व्यवहार हो जाय तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? सादे और चुस्त कपड़े जो नारी के आकर्षण को दिखाने केलिए अभिप्रेत न हों, हमारी बहुत कुछ रक्षा कर सकते हैं। हमारा शोभा शृंगार चुने हुए समारोहों तथा घर के भीतर ही सीमित रहना चाहिए। हमें अपने सौन्दर्य और आकर्षण को गली हाट में कदापि न ले जाना चाहिए। हमें सड़क पर चलते हुए निर्दोष भाव में भी पुरुषों की ओर न देखना चाहिए। परन्तु अवसर आने पर भीगी बिल्ली बन जाने से गुंडों की हिम्मत बढ़ सकती है। हमें परमात्मा में मानव की भलमनसाहत में और अपने में विश्वास रख कर पवित्र हृदय से उत्पन्न साहस को अपनी ढाल बनाना चाहिए।"

इन विचारों पर किसी विशेष टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। नवयुवकों और नवयुवतियों में व्याप्त अनुशासन हीनता अनैतिकता और अशिष्टता के निराकरण केलिए स्वस्थ वातावरणकी उत्पत्तिकी विशेष आवश्यकता है। बड़े लोगों का कर्त्तव्य यह है कि वह अपनी शिक्षा और उदाहरण से देश वासियों की प्रवृत्तियों को भोगवाद की ओर से हटाकर त्याग वाद की ओर ले जाने का सत्प्रयत्न करें। माता पिताओं अभि भावकों और गुरुजनों को बच्चों में धार्मिक एवं उत्तम संस्कार डालने की चेष्टा करनी चाहिए। घर और स्कूल का वातावरण परिष्कृत रहना चाहिए। उनमें धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्तम साहित्य तथा वीरों एवं महापुरुषों की जीवनियों के पठन पाठन की चाह उत्पन्न करके कहानियों आदि के नीचा गिराने वाले साहित्य के प्रति अरुचि उत्पन्न की जानी चाहिए। इन सबसे बढ़ कर राज्य का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अस्वस्थ वातावरण के उत्पन्न होने का कारण न बने। अश्लील चित्रों एवं अश्लील साहित्य के प्रदर्शनों और प्रचार को कठोर हाथों से बन्द करे। राजनैतिक दासता के अभिशापों के रूप में हम में जो अवगुण घर कर गए हैं, उनका निराकरण होना चाहिए न कि उनका रक्षण एवं सम्वर्द्धन। राज्य के यश और स्वतन्त्रता के रक्षण के लिए यह अनिवार्य है कि मानव की धार्मिक उच्चगामिनी प्रवृत्तियों को जाग्रत किया जाय और उन्हें अच्छे नागरिक बनाया जाय।

चारित्रिक एवं धार्मिक विशेषताओं को नष्ट करने वाली कोई भी योजना वा यत्न राष्ट्र विरोधी है भले ही उससे किसी राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति होती हो।

धर्म शिक्षा

श्रीयुत राज गोपालाचार्य जी ने गत दिसम्बर में आगरा विश्व विद्यालय में दीक्षान्त भाषण देते हुए स्कूलों और कालिजों में धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। उनके भाषण का सार उसके निम्नलिखित वाक्य में आ जाता है।" यदि

हम धर्म को स्कूलों से वहिष्कृत करते हैं, तो हम उस वस्तु का परित्याग करते हैं जो युग युगान्तर से चरित्र निर्माण के लिए अनिवार्य सिद्ध होती आरही है ।"

माननीय आचार्य जी ने चरित्र पर बल देते हुए कहा चरित्र शारीरिक शक्ति और बौद्धिक प्रख रता से भी अधिक महत्त्व पूर्ण है । इसके बाद उन्होंने वर्तमान सन्तति की चरित्रहीनता की काली तस्वीर प्रस्तुत की । हम अपने चारों ओर क्या देखते है, जो जरा बुद्धिमान और शिक्षित है वह धन के पीछे भाग रहा है और इस दौड़ में यह नहीं देखता कि धन संग्रह के साधन उचित हैं या अनुचित । इसके साथ ही जीवन का भोग वाद का भ्रमपूर्ण दृष्टिकोण और अहंकार बढ़ रहा है । इस के आगे उन्होंने आधुनिक भारतीय नव युवक की मानसिक दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहा 'जब रोग गुंडा गर्दी और चरित्र हीनता में परिणत हो जाता है तो हम भी निष्क्रिय रूप से उस पर आंसू बहाते हैं ।'

"इस रोगका इलाज क्या है प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वीकार करता है कि हमें बच्चों के हृदयों में आत्मिक गुणों को विकसित करना चाहिए । उसके हृदय में परमात्मा के प्रति श्रद्धा के भाव भरने चाहियें जो इस दृश्यमान् जगत के पीछे काम करता है । सृष्टि का शासक परमात्मा है । क्या हम अपने नवयुवकों और नवयुवतियों के दिमागों को इस महान् सत्ता से अछूता रखने का यत्न नहीं कर रहे हैं हमारे पूर्वजों ने और महान् राष्ट्र के पूर्वजों ने परमात्मा की सत्ता के चिन्तन और उसकी उपासना से ही तो शक्ति ग्रहण की थी । उनकी उपासना उनकी शक्ति का स्रोत था जिससे वे दुर्भावनाओं पर विजय पाकर चरित्र के उच्चादर्शों की रक्षा करते थे ।"

विद्वान राजनीतिज्ञ ने अपने भाषण में उस खालीज गह का दो बार उल्लेख किया जो नवयुवकों के हृदयों में धर्म शिक्षा के अभाव से उत्पन्न होती है । उन्होंने कहा हम विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा न देकर खाली स्थान का निर्माण कर रहे हैं ।हमने नव युवकों और नव युवतियों के लिए आचार हीनता का गढा खोद दिया है ।

व्यावहारिक सुधार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें धर्म सम्बन्धी भय को दूर भगाना चाहिए । यह दृष्टि कोण पुराने हिन्दू मुस्लिम झगड़े और विवादों का फल है । धर्म के मामले में निरपेक्षता का धारण करना उचित है परन्तु धर्म पर निषेधात्मक प्रतिबंध लगाकर उस निरपेक्षता की रक्षा करना गलत है । हमें स्कूलों और कालिजों में धर्म शिक्षा की सुविधायें उपस्थित करनी चाहियें । छोटे २ बच्चों को उनके परिवार के धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की शिक्षा दी जानी चाहिये । उन्हें वीरों और आदर्श चरित्र वाले महानुभावों की जीवनियां पढ़ाई जानी चाहिए ।

वस्तुतः बिना धार्मिक शिक्षा के लौकिक शिक्षा आत्मा विहीन शरीर के समान होती है । धार्मिक शिक्षा का पाठ्य क्रम क्या हो ? इसका निर्णय ही दुरूह प्रश्न है । यह तो अनिवार्य्य ही है कि उस शिक्षा का आधार आस्तिकता हो और शिक्षायें विवादास्पद न होकर आदर्श सार्वभौम सत्यों पर आश्रित हों । इसके साथ ही उन को पनपने देने के लिए वातावरण परिष्कृत किया तथा रखा जाय ।

चुनाव और 'देशपूजा

एक समाचार के अनुसार कुछ कांग्रेसी नेताओं और कार्यकर्त्ताओं ने आने वाले चुनाव में कांग्रेस टिकिट प्राप्त करने के लिए उज्जैन के महाकाल के मन्दिर में पूजा की और भगवान् शिव से प्रार्थना की कि "हे प्रभु ! चुनाव का टिकट दिलाने में मदद करो इन भक्तों ने अपने इष्ट देवता पर भेंट चढ़ाते हुए यह वचन भी दिया कि यदि वे चुनाव में

सफल हुए तो और अधिक भेंट आकर चढ़ायेंगे।" यह समाचार बड़ा मनोरंजक है। भारत में जहां प्रायः हर प्रकार की जहालत फल फूल सकती है, वहां इस प्रकार की घटना का होना आश्चर्य जनक नहीं है। चुनाव मनुष्य को कितना स्वार्थान्ध और उचित अनुचित में भेद करने में असमर्थ बना देता है यह इस घटना से सुस्पष्ट है। इस प्रकार के कृत्य टिकिट के इच्छुकों की अयोग्यता के सबसे प्रबल प्रमाण हैं। चुनाव में खड़े होने वाले जिन व्यक्तियों को देश हित के स्थान में आत्म संवर्द्धन प्रिय हो उनसे देश के कल्याण की क्या आशा की जा सकती है? यदि देवता की पूजा से कांग्रेस टिकिट मिल जाय तो उससे शायद ही कोई वंचित रहे परन्तु ऐसा होना असंभव है। देश सेवा की भावना को, आत्म संवर्द्धन की भावना से ऊपर रखने वाले भले व्यक्तियों को न देवी देवताओं की कथा पूजा की आवश्यकता होती है और न अनुनय विनय करने की। देश के देवता उन्हें स्वयं चुन लिया करते हैं।

*

एक विचारणीय पत्र

श्रीयुत जीवाराम जी आर्य श्रीकरणपुर (राजस्थान) से लिखते हैं :—

"नगरों में तो अब भी आर्य समाज का कुछ न कुछ काम होता रहता है परन्तु ग्रामों में पहले जो थोड़े बहुत प्रचारक पहुंचते थे उनका दसवां भाग भी अब नहीं जाते। इसका कारण आर्य समाज की वैश्य वृत्ति, केवल धन इकट्ठा करना पर प्रचार में न लगाना है या लगाना है तो केवल स्कूलीय शिक्षा पर जिनमें ऐसे विद्यार्थी तय्यार होते हैं जैसे सरकारी संस्थाओं में. फिर आर्य समाज को उन संस्थाओं में धन लगाने से क्या लाभ जब कि वैदिक प्रचार का कोई काम नहीं हो रहा।"

इसके आगे पत्र प्रेषक महोदय प्रचार में जनता के मनोरंजन को सैद्धान्तिक प्रचार पर प्रमुखता देने की परिपाटी के प्रचलन पर खेद प्रकट करते हुए सुधार के कतिपय रचनात्मक सुझाव निम्न प्रकार प्रस्तुत करते हैं :—

"प्रचारक गण केवल किस्से कहानी सुनाकर, सिनेमा की तर्जें सुनाकर, वा दलगत राजनैतिक पार्टियों की प्रशंसा या निन्दा करके आर्य समाज के प्रचार को विस्तृत नहीं कर सकते न गहरा बना सकते हैं। प्रचारकों को ऋषि दयानन्द का ठोस कार्यक्रम अपनाना होगा तभी वे प्रचार में सफल हो सकेंगे। जहां भी प्रचारक जांय कम से कम हवन सामग्री और यज्ञोपवीत अपने साथ ले जांय। यज्ञ और यज्ञोपवीत से ग्राम के लोगों में आर्य समाज का बीजा रोपण सहज हो सकता है। प्रचार से पहले यज्ञ हो या यदि पहले न हो सके तो दो या तीन दिन के प्रचार के बाद अवश्य हुआ करे जिसमें स्त्री पुरुष सम्मिलित रूप से भाग लें। उस समय भी विशेष धर्मोपदेश हुआ करे। 'किस्से कहानी और राजनैतिक दलों की निन्दा वा प्रशंसा का काम छोड़कर सिद्धान्तों के प्रचार पर बल दिया जाय। पं० बस्तीराम जी ने हरियाने में सिद्धान्तों का ही भजनों द्वारा प्रचार किया था किस्से कहानी गा गा कर और मनोरंजन करके नहीं।"

यह पत्र विचारणीय है। इस पर किसी विशेष टीका टिप्पणि की आवश्यकता नहीं है। अपने में स्वयं स्पष्ट है।

उत्तम उदाहरण

श्रीयुत ओ३म् प्रकाश जी पुरुषार्थी की प्रेरणा पर सभा के ईसाई प्रचार निरोध कार्य के लिए श्री

युत मंगतराम जी सत्यनारायण जी सलकिया हावड़ा श्री सेठ ठाकुरदास जी सुरेखा के सुपुत्र श्री सेठ रतनलाल सुरेखा सलकिया निवासी ने ५०, ५०) रु० मासिक उड़ीसा केन्द्र को प्रदान किए थे। श्रीयुत मंगतराम जी से ४-१-५७ तक ६००) और श्री सेठ रतनलाल जी से ३००) प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त श्रीमती कौशल्या देवी जी हाड़ा स्त्री आर्य समाज भवानीपुर से उक्त केन्द्र को सन् १९५६ में ५०) मासिक के हिसाब से ५००) प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त रिलीफ के लिए १३४) १९५७ वस्त्रादि तथा ५ मन चावल उक्त स्त्री समाज से मिले। इस सहायता के लिए सभा कृतज्ञ है। वर्ष भर में केन्द्र द्वारा ५०० से अधिक ईसाइयों को आर्य धर्म में दीक्षित किया गया। केन्द्र के द्वारा एक उत्तम औषधालय संचालित हो रहा है। जिससे प्रतिमास हजारों रोगी लाभ उठाते हैं जिसकी प्रशंसा उड़ीसा राज्य के मंत्रियों तक ने मुक्तकण्ठ से की है। एक उपदेशक विद्यालय और गुरुकुल चलाने की योजना बहुत अंश में पूरी हो चुकी है। हीराकुंड के पास एक विशाल आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य हो रहा है जो आगामी बोध रात्रि तक पूरा हो जायगा। जिस पर लगभग १० हजार व्यय होगा। दानी महानुभावों को यह जानकर हर्ष होगा कि उनकी सहायता का बड़ा सदुपयोग हुआ है। आशा है भविष्य में न केवल उनकी सहायता जारी रहेगी अपितु अन्य महानुभाव भी उनके उत्तम उदाहरण का अनुसरण करके धन से सार्वदेशिक सभा के हाथ दृढ़ करेंगे।

❀

आर्यसमाज का इतिहास

श्रीयुत पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति कृत आर्य समाज के इतिहास के प्रथम भाग की जिल्द बँधने में विलम्ब हो जाने से ग्राहकों को भेजा न जा सका। अब फरवरी के प्रथम सप्ताह में उसका स्टाक सभा कार्यालय में आ जायगा और बिक्री का काम प्रारम्भ हो जायगा। ग्रन्थ का मूल्य ६) है। इस ग्रन्थ की छपाई को उत्कृष्ट बनाने और अधिक से अधिक चित्र देने में कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा गया है। ग्रन्थ के भूमिका लेखक श्रीयुत डा० गोकलचन्द नारंग एम० ए० पी० एच० डी० हैं। सभा एक बड़ी अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति कर रही है। अब आर्य जनता का कर्त्तव्य है कि वह इस ग्रन्थ को शीघ्र से शीघ्र अपनाकर ग्रन्थ के दूसरे और तीसरे भाग की छपाई के कार्य को सुगम बनाए। यह ग्रन्थ प्रत्येक आर्य परिवार, आर्य संस्था और आर्य समाज में रहना चाहिए और भेंट तथा पारितोषिक के रूप में सुपात्रों को पहुंचाना चाहिए। जिनका धन पूर्व से प्राप्त हो चुका है सबसे पहले उन्हें पुस्तक भेजी जायगी।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ राज्य ❀

१—"इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।"

२—"जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक पत्र को ५०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल जी शर्मा ककुहास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल शर्मा कानपुर, वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने "सार्वदेशिक" पत्र के हितार्थ बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार कार्तिक २०१३ वि० अक्टूबर १९५६ ई० को प्रस्थापित की।

नियम—

१—इस मूलधन से प्राप्त वार्षिक ब्याज का आधा भाग पत्र को सहायता रूप में मिलता रहेगा। शेष आधा भाग इसी निधि में सम्मिलित होता रहेगा।

२—यदि किसी भी कारण वश पत्र बन्द हो जाय तो उक्त सहायता का मिलना भी बन्द हो जायगा और वार्षिक ब्याज की सम्पूर्ण रकम मूलधन में मिलती रहेगी।

३—पत्र यदि पुनः चालू हुआ तो उक्त सहायता प्राप्ति के लिये वह पूर्ण अधिकारी होगा।

४—पत्र के चालू न होने की पूर्ण निराशा में सार्वदेशिक सभा उक्त योजना का सर्वाधिकार अपने ही किसी अन्य योग्य आर्य पत्र को दे सकती है।

५—सभा के निश्चयानुसार उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना उत्साहार्थ प्रति तीसरे मास प्रकाशित होती रहेगी।

सार्वदेशिक सभा की ७-१०-५६ की अन्तरंग का तत्सम्बन्धी निश्चय—

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह ५०००) का दान सधन्यवाद स्वीकार किया जाय और उक्त योजना भी स्वीकार की जाय। यह सभा श्री भवानीलाल जी शर्मा को यह आश्वासन देती है कि उपरोक्त योजना सदैव चलती रहेगी। श्री शर्मा जी ५०००) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को अविलम्ब भेज दें ताकि कार्य आरम्भ करने में विलम्ब न हो।

श्री शर्मा जी का सार्वदेशिक पत्र की सहायतार्थ ५०००) का दान सभा को प्राप्त हो चुका है। जहाँ यह दान उनकी दानशीलता एवं आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा का सूचक है वहां सार्वदेशिक पत्र की लोकप्रियता का भी द्योतक है। उन्होंने आर्य नर नारियों के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। हम सभा तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। इस राशि की आय सार्वदेशिक की उन्नति में ही व्यय की जाती रहेगी।

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली-६

श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की जन्म शताब्दी अप्रैल मास वैशाखी पर मनाने का निश्चय किया है। इस अवसर पर सभा की ओर से एक स्मृतिग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ में स्वामी जी के जीवनी सम्बन्धी लेख, उनके प्रति श्रद्धांजलि तथा संस्मरण और वैदिक सिद्धान्तों पर विद्वानों के विशेष रूप से लिखे हुए लेख दिए जारहे हैं।

हिन्दू समाज पर स्वामी जी के जो उपकार हैं उन को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। हरिजनों के उद्धार का काम उन्होंने तब शुरू किया था जबकि देश के बड़े, बड़े नेता भी उसको उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, उनके शुद्धि और संगठन के कार्य का उद्देश्य हिन्दू जनता में नव जीवन का संचार करना था। समाज सुधार के काम की नींव उन्होंने तब डाली थी जबकि उसको सर्वथा अनावश्यक समझा जाता रहा। वे हिन्दू समाज केलिए जिए और हिन्दू समाज के लिए ही उन्होंने अपना उत्सर्ग कर दिया परन्तु उनका हिन्दुत्व का अभिमान संकीर्ण साम्प्रदायिकता से स्वार्थ रहित था। दिल्ली में सत्याग्रह का संचालन कर के और फौजी शासन से आहत पंजाब की सुधि लेकर वहां अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन को सफल बना कर अपनी उज्वल राष्ट्रीयता का परिचय दिया।

आर्य समाज के वे अप्रतिद्वन्द्वीनेता थे और उसकी नैतिकता को उन्होंने सदा ही बनाए रखा। ऐसे राष्ट्र महापुरुष की पुनीत जन्म शताब्दी सभी शहरों में विशेष उत्साह के साथ अवश्य ही मनाई जानी चाहिए। आर्य समाजों को इस समारोह को सफल बनाने के लिए अभी से लग जाना चाहिए। स्मृति ग्रन्थ की कीमत १०) होगी और पेशगी आर्डर भेजने वालों को कीमत में रियायत दी जायगी। आशा है सभी स्थानों में यह उत्सव विशेष उत्साह से मनाया जायगा।

धर्मवीर वेदालंकार
संयोजक समिति
सार्वदेशिक सभा देहली—६

अध्यात्म सुधा

पाप का स्वरूप

पाप क्या है ? यह प्रश्न विकट है। पाप के स्वरूप का निदर्शन अति दुस्तर कार्य है। इसके सम्बन्ध में भिन्न २ धर्मों (मतों) की भिन्न सम्मति है। जो काम एक मत के अनुसार पाप है वही दूसरे मत के अनुसार पुण्य है। पशु बध एक वैष्णव की दृष्टि में पाप है परन्तु एक मुसलमान की दृष्टि में पाप नहीं है। वह पशु बध भी अल्लाह के नाम पर विस्मिल्लाह—कहकर करता है मानों पशु का मारना भी उसके बनाने वाले अल्लाह को प्रिय है। पशु की बलि से अल्लाह प्रसन्न होता है। शराब पीना मुसलमानों के मत के अनुसार पाप है परन्तु एक ईसाई उसे पाप नहीं गिनता। पादरी तक शराब पीते हैं। ईसाइयों में किसी को स्वास्थ्य रक्षा की मंगल कामना के लिए शराब पीना सर्व व्यापी रिवाज है।

इसी से सम्बद्ध दूसरा प्रश्न यह है कि संसार में पाप कहां से आया? ईश्वर तो निष्पाप निष्कलंक है। उसकी रची हुई सृष्टि में तो पाप के लिए कोई स्थान होना ही न चाहिए था। यह प्रश्न ईसाई मुसलमान तथा पारसियों के लिए अति विकट सिद्ध हुआ है इसका कोई अन्य उत्तर न दे सकने पर उन्होंने पाप के एक स्रष्टा का अस्तित्व मानना अनिवार्य समझा।

पारसियों ने इस पाप के अधीश्वर को अहरमान और ईसाई मुसलमानों ने शैतान का नाम दिया। ईसाई मुसलमानों ने तो परमेश्वर और शैतान में युद्ध तक करा डाला क्षेत्र स्वर्ग को बनाया। इस युद्ध में शैतान हारा और स्वर्ग से निकाला गया परन्तु वास्तव में उसी की विजय हुई क्योंकि स्वर्ग से निकलते समय उसने यह शपथ खाई कि वह परमेश्वर की मानसिक सृष्टि को बहकाता और उससे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कराता रहेगा। इस वीर ने अपने प्रण को प्राण पण से निवाहा और अब तक वह उसे निबाहता आता है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा (मनुष्य जाति के आदिम माता पिता) को यह आज्ञा दी थी कि अदन के बाग में जहां उन्हें बिहार करने के लिए रखा गया था गेहूं के पेड़ के फल को न चखें। शैतान ने सांप के रूप में हव्वा को बहकाया और हव्वा ने आदम को फुसलाया और अन्त में दोनों ने गेहूं का फल खाया। इस आज्ञा भंग रूपी पाप का उन्हें यह दंड मिला कि अमरत्व खोकर मरण धर्मी बनना पड़ा और अदन के बाग से निकाले गए। तभी से पाप संसार में आया। यदि पाप ने वास्तव में इसी प्रकार पृथ्वी पर पदार्पण किया हो तब भी समझ में नहीं आता कि पाप तो किया आदम और हव्वा ने और उनके साथ दंड दिया गया उनकी प्रलय काल पर्य्यन्त होने वाली संतान को जैसा कि इंजील में लिखा है।

कोई भी ईसाई या मुसलमान पाप की सम्यक् मीमांसा नहीं कर सकता और इस प्रश्न का कि

पाप संसारमें कैसेआया सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सकता। इस प्रश्न का उत्तर वेद के निम्नलिखित मंत्र से मिल जाता है:—

"अग्नेनय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराण्मेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम्॥

इस मंत्र में एक शब्द में पाप के स्वरूप का वर्णन कर दिया गया है। यह बताता है कि एनः (पाप) जुहराणम् (कुटिल, टेढ़ा, वक्र, तिर्छा) है उसमें सीधा, सच्चापन, ऋजुता, हेर फेर का अभाव नहीं है। पाप कहां है? जहां सत्य नहीं, सीधापन नहीं, जहां भय नहीं, शंका नहीं, लज्जा नहीं, जहां छिपाव नहीं, संकोच नहीं, सन्देह नहीं, जहां आत्म ग्लानि नहीं, पश्चात्ताप नहीं वहां पाप भी नहीं। यह सब बातें कहां होती हैं? वहां ही जब मनुष्य सीधे मार्ग से हट जाता है, सरलता को छोड़ कर कुटिलता का आश्रय लेता है। पाप और अपाप के जानने की कसौटी केवल यही है कि प्रत्येक काम करने से पहले मनुष्य यह सोचे कि वह सीधे मार्ग पर जा रहा है या टेढ़े मार्ग पर। उससे उसकी आत्मा में ग्लानि उत्पन्न होती वा सन्तुष्टि। उससे परमात्मा की आज्ञा का भंग होता है या पालन। उससे किसी को दुःख पहुँचेगा या सुख। किसी के स्वत्व का अपहरण होगा वा उसकी रक्षा इत्यादि ऐसा करने से मनुष्य को तत्काल ज्ञात हो जायगा कि जो काम वह करने चला है वह पाप कर्म है या पुण्य कर्म।

मनुष्य जब पाप करता है वह किसी शैतान वा अहरमान के बहकाने से नहीं करता प्रत्युत स्वयं ही करता है। अपने ही दुष्ट भावों की प्रबलता से जिन्हें उसने ही प्रबल बनने का अवसर दिया है अपनी ही कुटेवों के कारण से करता है जिन्हें उसने ही बनाया है। इसीलिए वह पाप की सजा भुगतता है और उसे भुगतनी भी चाहिए। यदि वह वस्तुतः शैतान के बहकाने से पाप करता है तो वह स्वतंत्र कर्त्ता नहीं रहता और न्याय के अनुसार उसे दंड न मिलना चाहिए। जहां परतन्त्रता है वहां उत्तरदायित्व नहीं।

मंत्र में न केवल पाप का स्वरूप ही बताया गया है प्रत्युत उससे बचने का उपाय भी वर्णन कर दिया गया है। वह उपाय है परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना। हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् (अग्ने) हमें सुपथ या अच्छे मार्ग पर ले चल। हम तेरी बहुत २ स्तुति करते हैं। तू हमारे सारे कर्मों को जानता है। हमें कुटिल पाप से दूर रख सुपथ पर चला कर हमें सुख समृद्धि का भागी बना।

मार्ग दर्शक कौन हो सकता है? वह जो मार्ग को जानता है। मार्ग कौन दिखा सकता है? जिसके हाथ में प्रकाश है। परमेश्वर से अधिक ज्ञानी और प्रकाशवान कौन हो सकता है? इसीलिए वही सबसे श्रेष्ठ नेता है। वह मनुष्यों के हृदय के सब भावों को और मनुष्य की निर्बलताओं को जानता है। उसको पूर्ण ज्ञान है कि किस को सुपथ पर चलाने के लिए किस बात की आवश्यकता है।

मंत्र ने थोड़े से शब्दों में कितनी महत्वपूर्ण शिक्षा दी है। इसे पाठकगण विचारकर देखें।

पाप क्या है? पाप से कैसे बचा जा सकता है? पाप से बचने का फल क्या है? इन सब प्रश्नों का जो सदा मनुष्य को चक्कर में डाले रहते हैं उत्तर मंत्र दे देता है और उत्तर भी ऐसा जो बड़े २ तार्किकों को निरुत्तर कर देता है।

(अध्यात्म प्रेमी)

*

भारत सरकार का नया पंचांग

[श्रीयुत पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० रि० चीफ जज]

सार्वदेशिक के दिसम्बर मास के 'अंक में एक लेख "भारत सरकार का नया कलैंडर और उसकी रूप रेखा" शीर्षक से श्री राव बिहारी लाल जी के नाम से छपा है जिसमें उसका अच्छा वर्णन दिया गया है।

इस कलैंडर को भारत सरकार की आज्ञा से एक विद्वानों की कमेटी ने तय्यार किया जिसके अध्यक्ष सुप्रसिद्ध विद्वान श्री मेघनाद साह F.R.S. M.P थे। मेरा भी कमेटीसे संपर्क रहा था और मेरा नाम उसकी छपी रिपोर्ट के ३३ पृष्ठ पर लिखा है। कमेटी ने यह प्रस्ताव किया था कि इस नये पंचांग का जो National Calendar (राष्ट्रीय पंचांग) कहलायेगा २१ या २२ मार्च सन् १९५६ से सारे भारत वर्ष में प्रचार कराया जाय। पर श्री मेघनाद साह की अचानक मृत्यु हो जाने से और कुछ अन्य कार्यो से ऐसा न हो सका और २३ अक्टूबर सन् १९५६ को सरकार की ओर से प्रेस की एक विज्ञप्ति दी गई कि सरकार ने अब २२ मार्च १९५७ से सारे भारत में इस पंचाग को प्रचारित करने का निश्चय किया है। टाइम्ज आफ इंडिया

(२) २६ अक्टूबर १९५६ के Times of India के अंक में National Calendar के शीर्षक से एक संपादकीय नोट प्रकाशित हुआ जिस में इस कलैंडर की कुछ त्रुटियां दिखलाई गई हैं, जिनमें मुख्य दो इस प्रकार हैं—

(क) The Reform plan itself is nothing, and under it the national Calendar will only be attached as a tail to the Gregoreon Calendar.

(ख) The Committee decided against bringing back the yearly 23 days.

अर्थ (क) सुधार की विधि हो अधूरी है और उसके अनुसार नेशनल कलैण्डर केवल ग्रीगोरियन कलैण्डर (ईसवी पंचाग) में एक दुमछल्ले के रूप से जुड़ा होगा।

ख) कमेटी ने वर्ष को २३ दिन पीछे हटाने के विरुद्ध निश्चय किया है।

मेरी संमति में ये दोनों आक्षेप निर्मूल हैं, और इनसे जनता में भ्रान्ति और नये पंचांग की ओर अनास्था होने का भय है। इसलिये मैंने १० नवम्बर १९५६ को एक छोटा सा लेख उसी पत्र "Times of India को स्पष्टी करण के रूप से भेजा। पर इस पत्र ने अब तक लेख को नहीं प्रकाशित किया। इसलिए मैं इस लेख द्वारा उसका उत्तर देने का प्रयत्न करता हूं जिससे जनता में भ्रान्ति फैलने की आशंका न हो।

(३) पहला (क) आक्षेप बिलकुल निर्मूल है। रिफार्म कमेटी ने जो पंचांग तय्यार किया है वह बिलकुल स्वतन्त्र है, और हमारे ज्योतिष के सौर वर्ष के आधार पर है। उसमें चान्द्र वर्ष जोड़ दिया गया है क्योंकि हमारे पर्व (त्यौहार) अधिकतया चान्द्र वर्ष की तिथियों के अनुसार होते हैं Gregoreon Calendar (ईसाई संवत्सर) चलता रहेगा। पर National Calendar हमारा राष्ट्र सम्वत किसी प्रकार उस पर आश्रित नहीं रहेगा।

(४ दूसरा (ख) आक्षेप अयुक्त है। हमारे सौर वर्ष के पंचांग में यह भारी दोष था कि हमारे ज्योतिषियों ने सायण विधि को छोड़कर अपने फलित ज्योतिष के मोह से और अपने स्वार्थ वश निरयण विधि का अनुसरण किय

जिसके कारण पिछले कई सौ वर्षों की भूल बढ़ते बढ़ते २३ दिन का अन्तर पड़ गया! परिणाम रुप सौर वर्ष का आरम्भ, (२१ या २२ मार्च को होना चाहिए था) अब १३ या १४ अप्रैल को होता है। वही वर्ष का नया दिवस new years day माना जाता है, और विषुवत संक्रान्त कहलाता हैं इस संक्रान्त को दिन व रात बराबर होने चाहिये जैसा कि कहा गया है यत्र रा त्रिन्दिवा साम्य विषुवं विषवच च तत।

अर्थात् जिस दिन रात व दिन समान हों वह विषुव या विषवत् कहलाता है।

श्री सम्पादक महोदय का यह लिखना ठीक नहीं कि रिफार्म कमेटी ने इस बड़ी २३ दिन की भूल को शुद्ध नहीं किया। कमेटी ने यह स्पष्ट लिख दिया कि नये वर्ष का आरम्भ २१ या २२ मार्च से हुआ करेगा और वह चैत्र कहलायेगा अब तक यह नव वर्ष का दिवस १३ या १४ अप्रैल को होता है। सो २३ दिन की भूल सौर वर्ष में से दूर हो गई। कमेटी की छपी हुई रिपोर्ट में जो अन्तिम सुझाव final Recommendations of the Committee दिये गये हैं, उसके पैरा ११ (पृष्ठ ६) में यह बात स्पष्ट लिख दी गई है। मैं उसके अन्तिम शब्द लिखता हू for this purpose the date 21st march 1956 which is 1 Chaitra 1878 seems to be the most suitable time for the introduction of the reformed Calendar throughout India अर्थात् उस अभिप्राय के लिये २१ मार्च १९५६ की तारीख, जो शाके १८७८ की चैत्र एक होगी। सारे भारत में संशोधित पंचांग को प्रचारित करने के लिए बहुत उपयुक्त मालूम होती है भारत सरकार की २३ अक्टूबर १९५६ की घोषणा के अनुसार अब २१ मार्च १९५७ को यह कार्य होने का निश्चय हुआ है।

(५) इस सारे झगड़े की मूल में ज्योतिष की सायण विधि व निरयण विधि के बीच का मत भेद है। सायण विधि विज्ञान Science के अनुसार है। निरयण विधि वर्तमान ज्योतिषियों की फलित सम्बन्धी कल्पनाओं के आधार पर है। श्री मेघनाद साह ने अपने लेखों में निरयण विधि का उग्र रूप से खण्डन किया है. और लिखा है कि वर्तमान ज्योतिषी निरयण विधि का इसलिये प्रयोग करते हैं कि वे जानते हैं कि वे यदि सायण विधि का प्रयोग करेंगे तो उनकी फलित लीला जो विज्ञान के विरुद्ध है, तुरन्त समाप्त हो जायेगी।

इसलिए यह सम्भव है कि पूर्वोक्त नैशनल कैलेण्डर या राष्ट्रीय पंचांग के प्रचारित होने पर वर्तमान ज्योतिषियों की जो सनातनी विचारधारा के हैं, मनोवृति इस नये पंचांग की ओर यदि विरोध की नहीं तो उदासीनता की होगी, इसलिये मैंने Times of India के उपयुक्त संपादकीय नोट के उत्तर में लेख लिखना उचित समझा था शिक्षित जनता भ्रान्ति में न पड़े। इसी अभिप्राय से यह लेख लिखता हूँ।

नया पंचाँग National Calendar बड़े महत्व का है सन् १९४७ में ईश्वर की कृपा से हमारे देश को स्वराज्य मिला। उसकी सबसे बड़ी देन तो स्वाधीनता ही थी जिसके लिये हम वर्षों से यत्न कर रहे थे। दूसरे नम्बर पर हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनना था। उसके बाद उसी प्रकार हमारा पंचाङ्ग भी स्वदेशी व स्वतन्त्र हो गया। जनता का कर्तव्य है कि सरकार की आज्ञा से प्रचारित हो जाने पर, अपने सब कार्यों में अधिकाधिक इस पंचांग का ही प्रयोग करें न कि पूर्ववत ईसाई संवत व कलेण्डर Gregoreon Calendar को ही अपनाते रहें। सरकार की ओर से जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उसमें ५ वर्ष के पंचाग तय्यार कराके लिख दिये गये हैं।

❋

वेद और विज्ञान

[लेखक—श्री पण्डित भवानीलाल भारतीय एम॰ ए॰]

महर्षि दयानन्द की सम्मति में वेद संसार की समस्त आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओं का मूल उत्स है। उन्होंने आर्यसमाज के नियमों की रचना करते समय वेदों के सम्बन्ध में जो नियम बनाया, वह भी वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक घोषित करता है। महर्षि के इस कथन का अभिप्राय यह है कि वेद जहां एक ओर पारलौकिक कर्तव्यों की व्याख्या करता है वहां उसमें भौतिक विज्ञान के बीज भी मूल रूप में विद्यमान हैं। महर्षि के इस सिद्धान्त में यों तो कोई नवीनता नहीं थी क्योंकि मनु आदि प्राचीन शास्त्रकारों ने भी वेदों को सभी धर्मों और कर्तव्यों का मूल' तथा ज्ञान का आदि स्रोत' स्वीकार किया था, परन्तु महर्षि ने इस सत्य को इस प्रकार से अभिव्यञ्जित किया जिससे लोगों को यह सन्देह होने लगा कि वे वेदों के विषय में एक नवीन मतवाद की स्थापना कर रहे हैं।

महर्षि ने अपनी वेद भाष्य भूमिका मे वेदानुमोदित विभिन्न विषयों का प्रामाणिक रूप से प्रतिपादन किया, साथ ही इन्होंने कुछ ऐसे विषयों का भी निर्देश किया जो मूलतः भौतिकवादी विज्ञानों से सम्बन्ध रखते थे। ऋषि ने विज्ञान की जिन शाखाओं का मूल वेदों में खोज निकाला था उनमें से प्रमुख ये हैं—(१) पृथिव्यादि लोक भ्रमण (२) धारणाकर्षण विषय (३) प्रकाश्य प्रकाश विषय (४, गणित विद्या (५) नौ विमानादि विद्या (६) तार विद्या (७) वैद्यकशास्त्र। इन सात विषयों में से प्रथम तीन तो स्पष्ट ही भूगोल और ज्योतिष सम्बन्धी विषय हैं। वेदांगों में ज्योतिष का कितना महत्व है यह किसी से अप्रकट नहीं है। ज्योतिष को वेद का चक्षु कहा गया है। 'आकृष्णेन रजसा' जैसे मन्त्रों की उपस्थिति में यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि वेद में इस विद्या का मूल अवश्य है। गणित तथा वैद्यक विषयक उल्लेख भी वेदों में यत्र-तत्र आये हैं। अथर्ववेद में आयुर्वेद शास्त्र का वर्णन है। अब केवल दो विद्यायें शेष रह जाती है जिनके आधार पर विपक्षी लोग यह आक्षेप करते हैं कि स्वामी दयानन्द ने वेदों में विज्ञान की मनमानी कल्पना करली है। ये विद्यायें हैं नौका विमानादि तथा तार विद्या।

नौकाओं और विमानों का वेद मन्त्रों में इतना स्पष्ट उल्लेख है कि कोई दुराग्रही व्यक्ति ही इस बात का हठ करेगा कि वैदिक युग में लोग इन यन्त्रों से वंचित थे। यही बात तार विद्या के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द के विज्ञानवाद पर आक्षेप सब कोई करते हैं परन्तु किसी ने उनके दिये हुये प्रमाणों का खण्डन आज तक नहीं किया।

आक्षेप कर्ता एक बात यह भी भूल जाते हैं कि स्वामी जी ने जहां वेद में विज्ञान के मूल तत्वों की उपस्थिति की बात कही है वहां इनका अभिप्राय क्या है? ग्रन्थकार के अभिप्राय को समझे बिना यों ही आक्षेप कर बैठना अनुचित है। स्वामी दयानन्द ने वेदों में जहां २ विज्ञान का का मूल बताया है वहां २ उनके कथन का तात्पर्य इतना ही है कि सृष्टि के प्रारम्भ काल में ईश्वर प्रदत्त होने के कारण वेदों में सभी ऐहिक और आमुष्मिक विषयों का समावेश माने बिना निष्कृति

नहीं हो सकती। परन्तु वेदों में इन विषयों का विस्तृत उल्लेख और विवेचन नहीं मिलेगा। ये विद्यायें बीज रूप में हैं और पश्चात् वे ही ऋषियों विद्वानों और मनीषियों ने वहां से लेकर ही उन २ बीज रूपी विद्याओं को महावृक्ष का रूप दे दिया है जो आज हमारे समक्ष विद्यमान हैं। मनु ने जब वेदों की महत्ता का कीर्तन करते हुये कहा था—

चातुर्वर्ण्यं त्रयोलोकाश्चात्वारश्चाश्रमा पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति॥
सैनापत्यं च राज्यं च दण्ड नेतृत्व मेवच॥
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्र विदर्हति॥[1]

तो उसका भी अभिप्राय यही था कि वेदों में सर्व विद्याओं, समस्त सामाजिक, राजनैतिक, सामरिक संस्थाओं तथा विधानों का मूल है। आक्षेप करने वाले महर्षि के हृदयगत भाव को न समझ कर मनमाने आक्षेप करते हैं। कोई चाहता है, क्या वेद में एटम बम भी है? अन्य व्यक्ति कहता है, अब एटम बम के आविष्कृत हो जाने पर दयानन्द के अनुयायी वेदों में एटमबम की सत्ता को भी सिद्ध करने लग जायेंगे। अथवा यह कहा जाता है कि दयानन्द के युग में तार आदि जिन वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रचार हो गया था उन्होंने उन २ आविष्कारों की सत्ता ही वेद मन्त्रों से सिद्ध कर दिखा दी यदि वे आज के युग में होते तो भी वे यही करते और परमाणुबम आदि विज्ञान के नवीनतम आश्चर्यों का मूल भी वेदों में खोज निकालते।

हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि अधिकांश आक्षेप कर्ता इसी कोटि के हैं और वे महर्षि के मन्तव्य को नहीं समझ सके। उनका कथन है कि स्वामी जी ने देश में एक नूतन अंध विश्वास को जन्म दिया है। उनके पूर्व भी वेद हिन्दुओं के पूज्य ग्रन्थ थे और वे आज भी हैं। किन्तु, पूज्य होने के माने यह तो नहीं है कि वेद में त्रिकाल का ज्ञान समाहित है। स्वामी जी ने कहा है कि वेद में केवल धर्म की ही बातें नहीं हैं, उसमें विज्ञान की भी सारी बातें प्रच्छान्न हैं ... वेदों को सभी ज्ञानों का कोष मान लेने से लोगों के ज्ञानोन्मेष में बाधा भी पड़ी?"[2]

हमारा निवेदन है कि ऋषि दयानन्द का वेदों में विज्ञान का मूल मानने का सिद्धान्त ज्ञान की वृद्धि या नवीन ज्ञानोन्मेष का बाधक नहीं है। यदि उनका यही मत होता तो वे स्पष्ट लिख देते कि वेदों के अतिरिक्त और किसी ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थ के अध्ययन की आवश्यकता ही नहीं है। परन्तु हम देखते हैं कि उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने तो अपनी पठन पाठन प्रणाली में वेदों के अतिरिक्त अन्यान्य लौकिक विद्याओं के ग्रन्थों के अध्ययन की व्यवस्था की है। उन्होंने अपने जीवनकाल में भी अनेक युवकों को जर्मनी आदि यूरोप के भौतिक समृद्धि और कलाकौशल प्रधान देशों में ज्ञान विज्ञान सीखने के लिये भेजने की योजना बनाई थी, यह उनकी जीवनी से स्पष्ट सिद्ध होता है। यदि उनका यही अभिमत होता कि वेदों के अध्ययन के अतिरिक्त अन्य किसी विज्ञान को सीखने की कोई आवश्यकता ही नहीं है तो वे ऐसा कदापि नहीं करते। अतः इस आक्षेप में कुछ भी तथ्य नहीं है कि स्वामी दयानन्द वेदों को सर्व विद्याओं का मूल बताकर अंध विश्वास के जनक और नवीन विज्ञान की प्रगति में बाधक थे।

लगभग ऐसा ही आक्षेप पं० बलदेव उपाध्याय ने भी किया है। सायण लिखित वेद भाष्यभूमिका संग्रह की प्रस्तावना में आप लिखते हैं-"अपरंचामी वेदेषु नवीनानामपि आधुनिकैः पाश्चात्य विज्ञान

१. मनुस्मृति अ०
२. संस्कृति के चार अध्यायः श्री दिनकर पृ० ४६९

वेदैभिः प्राकाश्यं नीतानामाविष्कारार्णा धूम्रयान-वायुयान तडिच्छकटस्वतप्राहादीनां नैव कल्पितां सम्भावनां, अपितु वास्तविकीं सत्तां वेदेमन्यन्ते। सर्वेषामाविष्कृतानां आविष्करिष्यमाणानां च विज्ञान तत्वानामाकरो वेदएवेति तेषाममिमतं मतभिवाव लोक्यते।··· परन्तु एषोऽपि सिद्धान्तो नैव विद्वज्जन मनोरमः।"[१] अर्थात् ये लोग (आर्यसमाजी विद्वान्) वेदों में आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान-यथा धूम्रयान, वायुयान, मोटर आदि की सत्ता की वेदों में केवल कल्पना ही नहीं करते अपितु उसे सत्य मानते हैं। इनका मत है कि वेद उन सब विज्ञान के सब तत्वों का भण्डार है जो आविष्कृत हो चुके हैं। परन्तु यह मत विद्वानों को मान्य नहीं। अपने अन्य ग्रन्थ "आचार्य सायण और माधव" में भी आपने यही बात लिखी है। "स्वामीजी (के अनुयायी पण्डितों) की सम्मति में वेदों में विज्ञान के द्वारा आविष्कृत समस्त पदार्थ (रेल, तार, वायुयान आदि) की सत्ता बतलाई जाती है। तब क्या वेद की महिमा इसी में है कि विज्ञान की समग्र वस्तुओं का वर्णन उसमें उपलब्ध हो। वेद आध्यात्मिक ज्ञान के निधि हैं। भौतिक विज्ञान की वस्तुओं का वर्णन करना उनका वास्तविक उद्देश्य नहीं है। ऐसी दशा में यौगिक प्रक्रिया के अनुसार इन चीजों को वेदों के भीतर बतलाना उचित नहीं जान पड़ता। इस प्रकार स्वामीजी की पद्धति को हम सर्वांश में स्वीकार नहीं कर सकते।"[२]

वैदिक सम्पत्ति नामक वेदविषयक प्रसिद्ध ग्रन्थ के लेखक पं० रघुनन्दन शर्मा की भी यही सम्मति थी कि जो लोग वेदों तथा अन्य वैदिक साहित्य से रेल, मोटर, बिजली की रोशनी का वर्णन निकाल कर यूरोप की वर्तमान भौतिक उन्नति के साथ मेल मिलाते हैं वे गलती करते हैं।[३] यह हमने संक्षेप में उन लोगों के मतों का उल्लेख किया जो स्वामी दयानन्द की इस बात से असहमत हैं कि वेद सब विज्ञान का आदि मूल है।

सायण के प्रति अनुचित पक्षपात प्रदर्शित करने के कारण पं० बलदेव उपाध्याय ने स्वामी दयानन्द पर यह आक्षेप तो किया परन्तु वे स्वयं इस बात को भूल गये कि सायण ने भी अपने अथर्ववेद भाष्य की भूमिका में उन अनेक विद्याओं का वेद में होना स्वीकार किया है जो स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक न होकर भौतिक हैं। सायण लिखते हैं कि अथर्ववेद में निम्न कर्मों का प्रतिपादन है— "सेनापत्यादि प्रधान पुरुष जय कर्माणि शत्रूत्सादितस्य राज्ञः पुनः स्वराष्ट्र प्रवेशकानि, राज्याभिषेकः, कृषिपुष्टि कराणि, शस्त्राद्यभिघातज रुधिरप्रवाह निरोधकानि, वात, पित्तश्लेष्म भैषज्यानि, शिरोक्षिना सिका कर्ण जिह्वा ग्रीवादि रोग भैषज्यानि, सुख प्रसव कर्माणि, जनानामैकपत्य सम्पादकानि सांमनस्यानि।"[४] इस सूची को और भी बढ़ाया जा सकता है। इसमें आप देखेंगे कि सायण ने राजनीति कृषि, वैद्यक तथा चिकित्सा आदि सभी विद्याओं का वेद में होना स्वीकार किया है। क्या उपाध्यायजी यह कह सकते हैं कि ये विद्यायें आध्यात्मिक हैं? यदि नहीं, तो फिर महर्षि दयानन्द के विज्ञानवाद पर ही उनका आक्रोश क्यों है? यदि वेद में समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान और शरीर विज्ञान का उल्लेख हो सकता है तो उसमें भौतिकी, रसायन शास्त्र आदि अन्य विद्याओं का मूल मानने में किसी को क्यों आपत्ति

१. प्रस्तावना पृ० २०
२. आचार्य सायण और माधव पृ० १२३
३. वैदिक सम्पत्ति की भूमिका
४. अथर्ववेद भाष्यभूमिका पृ० १३९

होनी चाहिये जब कि उनके उल्लेख बतलाने वाले मन्त्र वेदों में विद्यमान हैं। चारों वेदों के जो चार उपवेद हैं वे भी यही सूचित करते हैं कि वेदों में विज्ञान का मूल अवश्य है तभी तो ऋग्वेद का भूत आयुर्वेद (Science of Medicine and S) यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद (Military Science) सामवेद का उपवेद गांधर्व वेद (Science of Music and Fine arts) तथा अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद (Economics) है।

और आज तो महर्षि दयानन्द के इस मत का समर्थन सभी विद्वान् कर रहे हैं कि वेदों में विज्ञान का अस्तित्व विद्यमान है। योगी अरविंद ने इस विषय पर जो कुछ लिखा है वह मानो आक्षेपकर्ताओं के उत्तर रूप में ही लिखा है। वे कहते हैं—There is nothing fantastic in Dayanand's idea that the Veda containing truths of Science as well as truth of religion. I will even add my own conviction that the veda contains other truths of science, the modern world does not at all possess, and in that case Dayanand has rather understated than overstated the depth and range of the vedic wisdom."[1] अर्थात् स्वामी दयानन्द के इस विचार में कि वेद में न केवल धर्म के किन्तु विज्ञान के सत्य का भी मूल है, कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है। मेरा अपना तो यह भी विश्वास है कि वेद में एक ऐसे विज्ञान की सत्यता का प्रतिपादन है जिससे वर्तमान जगत् सर्वथा अनभिज्ञ है और इस अवस्था में स्वामी दयानन्द ने वैदिक ज्ञान की गम्भीरता तथा विस्तार को जताने में न्यूनोक्ति ही की है, अत्युक्ति नहीं। 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक पुस्तक के लेखक श्री दिनकर ने अरविंद की उपर्युक्त सम्पति उद्धृत कर यह आश्चर्य प्रकट किया है कि श्री अरविंद ने दयानन्द का समर्थन कैसे किया ?

वास्तव में बात यह है कि वैदिक विज्ञान के जिस सिद्धान्त पर स्वामी दयानन्द पहुंचे थे, उनके पश्चात् उनके परवर्ती वैदिक अनुसंधान में लगे रहने वाले अन्य यूरोपीय तथा भारतीय विद्वान भी उन्हीं निष्कर्षों पर पहुंचे और उन्होंने मुक्त कण्ठ से यह स्वीकार किया कि वेदों में विज्ञान का मूल स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है। जैकालियट नामक सुप्रसिद्ध विद्वान् ने अपनी Bible in India नामक पुस्तक में लिखा है—

Astonishing fact, the Hindu Revelation (veda) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with modern Science as it proclaims the slow and gradual formation of the world." अर्थात् यह एक बड़ी ही आश्चर्य जनक बात है कि ईश्वरीय धर्म ग्रन्थ कही जाने वाली पुस्तकों में केवल वेद ही ऐसे हैं जिसके विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्णतया संगत है, क्योंकि उनमें भी विज्ञान के अनुसार ही जगत की क्रमिक रचना का प्रतिपादन है।

एक अन्य अमेरिकन विदुषी श्री मती हीलर विलोक्स लिखती हैं We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great vedas. The most remarkable works containing not only religious ideas on a perfect life, but also facts which all the science has since proved true Electricity, Radium, Electrons, Airships, all seem to be

१. Dayanand and the Veda P.

know to the sires who ound the Vedas. "१

अर्थात हम सबने भारत के प्राचीन धर्म के विषय में सुना है और पढ़ा है। यह भारत उन महान वेदों की भूमि हैं जिनके अन्दर न केवल पूर्ण आदर्शमय जीवन के लिये धार्मिक तत्वों का ही निरूपण है अपितु उन सच्चाईयों का भी निर्देश है जिनको विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। वैदिक ऋषियों को विद्युत, रेडियम, इलेक्ट्रोन, हवाई जहाज आदि सब बातों का ज्ञान था, यह सम्भव प्रतीत होता है।

यह तो हुई पाश्चात्य विद्वानों की बात। बंगाल के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० सत्यव्रत सामश्रमी ने भी महर्षि दयानन्द के इस सिद्धात से पूर्णतया सहमति प्रकट की है और लिखा है, उस समय (उनका तात्पर्य सायण के युग से है —लेखक) जबकि फोटोग्राफी फोनोग्राफी, गैसलाइट, टैलीविजन, टैलीफोन; रेलवे और हवाई जहाजों का प्रचार भारत में नहीं था, किस प्रकार हमारे भारत देश के लोग (अभिप्राय भाष्यकर्ताओं से है—लेखक) इन मंत्रों के यथार्थ रहस्य को समझ सकते थे, जिनमें कि इन वस्तुओं की ओर संकेत हो।" २ अत: वेद भाष्य कर्ता की योग्यता का विचार करते हुए सामाश्रमी महाशय लिखते हैं—"इसलिये यह स्पष्ट है कि वही मनुष्य वेदों का योग्य भाष्यकार हो सकता है जिसे कि कृषि शास्त्र, व्यापार, भूगर्भ-शास्त्र, ज्योतिष, जल-स्थिति विद्या, अग्नि विद्या, वनस्पति शास्त्र, जीव शास्त्र, शरीर शास्त्र तथा युद्ध विद्या का पूर्ण ज्ञान हो। ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया भाष्य ही केवल पूर्ण संतोष दे सकता है और सब प्रकार के संशयों को मिटा सकता है।" १

सम्मतियों का अधिक विस्तार न करते हुये हम इतना ही लिखना पर्याप्त समझते हैं कि महर्षि दयानन्द ने जिन मंत्रों से भौतिक विज्ञान के विविध आविष्कारों की ओर संकेत किया है उनके उन अर्थों से हमारा मतभेद हो सकता है, परन्तु हम इस सिद्धान्त को ही इस आधार पर बहिष्कृत नहीं कर सकते कि वेद अध्यात्म विद्या का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ हैं अत: भौतिक विद्याओं से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं हो सकता। यदि सामश्रमी जी की सम्मति को महत्व दिया जाय, और देना ही चाहिए, तो उस दृष्टि से तो सायण जैसा व्यक्ति वेद भाष्य जैसे महत्व पूर्ण कार्य के लिये सर्वथा अयोग्य ही प्रमाणित होगा।

वेद में विज्ञान, विषयक पठनीय साहित्य—

१. ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के प्रकरण।

२. वेद और विज्ञानवाद ले० श्री० प्रेमचन्द काव्यतीर्थ

३. आर्य सिद्धान्त विमर्श में संकलित कविराज प० ब्रह्मानन्द का 'वेद और पश्चिमी विज्ञान' शीर्षक लेख।

---

१. Sublimity of the vedas में पृ० ८३ पर उद्धृत

२. महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्यानुशीलन पृ० ६५ पर उद्धृत

१. महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्यानुशीलन पृ० ६६ परउद्धृत

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज
(अन्यों की दृष्टि में)

सत्य यह है कि वर्तमान शताब्दी की दूसरी दशाब्दि आर्य समाज के लिए परीक्षणों और आपत्तियों का काल था। मलावार राजस्थान और उत्तर प्रदेश में आर्य्य समाज के सफल शुद्धि कार्य से मतान्ध मुसलमान भड़क गए थे। जिन लोगों को सदैव मुसलमानों को मनमानी छूट देकर हिन्दू-मुस्लिम एकता बढ़ाने की आशा रहती थी वे शुद्धि कार्य के लिए आर्य्य समाज को दोष देने लगे थे। स्वयं सरकार ने भी अनेक बार शान्ति स्थापित रखने के उद्देश्य से आर्य्य समाज की साधारण धार्मिक प्रगतियों में हस्ताक्षेप किया। उत्तर प्रदेश में यह हस्ताक्षेप इतना बढ़ा कि आर्य्य समाज के नेताओं को अपने अधिकारों के रक्षण और शिकायतों के निवारण के लिए तात्कालिक कार्यवाही पर विचार करने के लिए विवश हो जाना पड़ा। इन परिस्थितियों में सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा (इन्टरनेशनल एर्यन लीग) देहली ने स्थिति पर विचार करने के लिए आर्य्य कांग्रेस बुलाने का निश्चय किया। कांग्रेस का अधिवेशन ४ नवम्बर १९२७ को देहली में प्रारम्भ हुआ। स्व० लाला हंसराज जी इसके सभापति थे। देश के विभिन्न भागों के प्रति निधि और स्व० लाला लाजपतराय एवं लाला दीवान चन्द आदि २ प्रसिद्ध आर्यों ने इस में भाग लिया। पंडित मदन मोहन मालवीय सरीखे सुप्रसिद्ध हिन्दू नेता भी मंच पर विद्यमान थे। कांग्रेस का मुख्य प्रस्ताव उन उपायों से सम्बद्ध था जो देश के विभिन्न भागों में आर्य्यों की धार्मिक स्वतन्त्रता के अपहरण के विरुद्ध क्रिया में लाए जाने के लिए सोचे गए थे। उपस्थित प्रतिनिधियों में से बहुत से प्रतिनिधियों की मांग थी कि सत्याग्रह तत्काल आरम्भ किया जाय। लाला हंसराज जी जिन्होंने १९२१ में डी० ए० वी० कालेज (लाहोर) के प्रिंसीपल के रूप में अपनी संस्था में असहयोग की नीति के अपनाने का घोर विरोध किया था, कठोर उपायों के अपनाने के विरुद्ध थे। अतः विषय निर्धारिणी समिति और खुले अधिवेशन में एक समझौते का प्रस्ताव पास हुआ जिसके द्वारा १६ महानुभावों की एक समिति सत्याग्रह के स्थान और समय का निर्धारण करने के लिए नियुक्त की गई और उस बीच में १०००० स्वयं सेवकों और ५० हजार रुपया एकत्र करने का कार्य उसके सुपुर्द किया गया। यह बात नोट करने योग्य है कि लाला लाजपतराय जीने जिनके प्रधानत्व में १९२० में इंडियन नेशनल कांग्रेस के कलकत्ता के असाधारण अधिवेशन में असहयोग की नीति स्वीकृत हुई थी, इस कांग्रेस में कहा था कि अपनी शिकायतों के निराकरण के लिए हमें जल्दी में ऐसा पग नहीं उठाना चाहिए जिस पर बाद में पश्चात्ताप करना पड़े।

१९२७ की आर्य्य कांग्रेस भावनाओं के प्रदर्शन की दृष्टि से बड़ी सफल रही परन्तु इसकी सत्याग्रह की योजना का कुछ न बना। इसका कारण यह नहीं था कि आर्य समाज के सदस्य सत्याग्रह करने का कष्ट सहन करने के लिए तय्यार न थे किन्तु उसके नेताओं की दृष्टि में १९२७ में ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हुई थी कि

Hinduism through the Ages पुस्तक पर आधारित लेखमाला

वेदों की महत्ता

'On the Vedic ideal alone— it is possible to rear a new earth in the image and likeness of the Eternal heavens.

वैदिक आदर्श पर चलने से ही संसार पुनः सुखधाम बन सकता है।

(डा० जेम्स जिकन डी० लिट कृत
Path to peace पुस्तक पृ० ६०

What extracts I have read from the Vedas shed on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum free from particulars, simple and universal. The Vedas contain a sensible account of God.''

(अमेरिका के सुप्रसिद्ध
विचारक थोरियो)

जिसके कारण उग्र कार्य वाही की जाये। १२ वर्ष के बाद १९३९ में ऐसी स्थिति आई और आर्य समाज के सदस्यों ने बड़ी उत्तमता और यश के साथ उस पर विजय प्राप्त की। आर्य जन हैदराबाद राज्य* में सत्याग्रह के लिए विवश हो गए थे। उस राज्य ने आर्य समाज के प्रचारकों एवं सभाओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। लगभग १२००० सत्याग्रही जेल गए और २४ जेल में हुतात्मा हुए। अन्त में हैदराबाद सरकार ने आर्यों की मांगे स्वीकार की और ८ मास के भयंकर संघर्ष के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि समाने ८ अगस्त ३९ को सत्याग्रह बन्द कर दिया जिसमें अनेक पौराणिकों तथा अन्य हिंदुओंने भी भाग लिया।

दुर्भाग्य से हैदराबाद सत्याग्रह की ज्वलन्त सफलता १० वर्ष के अंधेरे काल में छुप गई। यह काल संभवतः आर्य समाज के इतिहास का सर्वाधिक कष्ट मय काल समझा जाता है।

हैंदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति के १ मास के भीतर ही द्वितीय महासमर छिड़ गया और कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के भयंकर संघर्ष में इस युद्ध की प्रतिक्रिया देख पड़ी जिसका अन्त देश के विभाजन की घोर आपत्ति के साथ हुआ। यतः आर्य समाज हिन्दू धर्म का सैनिक धर्म संघ है अतः भारत के मुसलमानों और आर्य समाज की नही पटती। युद्ध के कारण देश की राजनैतिक स्थिति बड़ी डांवाडोल हो गई थी। अतः ब्रिटिश गवर्नमेंट ने अपनी इस घातक नीति को दृढ़ किया कि देश के अल्प संख्यक वर्गों विशेषतः मुसलमानों के रुख को बहुसंख्यक हिन्दुओं के विरुद्ध कड़ा रखाया जाय और इस रीति से जब तक बन पड़े शक्ति को हस्तगत रखा जाय। इस नीति का एक दुष्परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम बहुल प्रांतों में आर्य समाज आक्रमण का लक्ष्य बना दिया गया। (क्रमशः)

---

*गंगा प्रसाद उपाध्याय कृत दी ओरिजिन स्कोप एन्ड मिशन आफ आर्य समाज पुस्तक पृ० १५८

अर्थात् वेदों के जितने अवतरणों का मैंने अध्ययन किया है उनसे मुझे बड़ा उच्च और पवित्र प्रकाश प्राप्त हुआ है। वेदों में पवित्र मार्ग का निदर्शन किया गया है जो एकदम सरल और सार्वभौम (व्यापक) है। वेदों में परमात्मा की बुद्धि संगत व्याख्या उपलब्ध होती है।

Astonishing faet! The Hindu Revelation (Vedas) is of all revelation the only one whose ideas are in perfect harmony with-modern science as it proclaims the slow and gradual foundation of the world."

(Bible in India P 62
by (M. Louis Jocalliat)

बड़े आश्चर्य की बात है कि 'ईश्वरीय ज्ञान समझे जाने वाले समस्त ग्रन्थों में केवल वेद ही है जिसके सिद्धान्त 'विज्ञान के सर्वथा अनुकूल हैं और जो संसार की क्रमिक रचना के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।

(बाइबिल इन इण्डिया)

वेदो ऽखिलो धर्म्म मूलम्

डा० वेलें टाइन लिखते हैं कि संस्कृत भाषा ही सब भाषाओं की जननी है। स्केभल साहब लिखते हैं कि संस्कृत के समान पूर्ण भाषा संसार में और है ही नहीं। मि० डबल्यू० सी० टेलर का मत है कि युरोप की—समस्त भाषाएं संस्कृत सेही निकली हैं। इन बातों से प्रमाणित होता है कि संस्कृत ही सर्वापेक्षा प्राचीन भाषा है। विद्वानों ने अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया है कि सर्वोत्तम संस्कृत भाषा में वेद ही एक मात्र धर्म्म पन्थ है। वेद धर्म्म पर से खाल्डियन धर्म्म और खाल्डियन पर से असीरियन धर्म्म की स्थापना हुई थी। जार्ज स्मिथ और डा० साइन्स के कथनानुसार असीरियन धर्म्म के आधार पर यहूदी धर्म्म के केवाला और केवाला के आधार पर बाइबिल की रचना हुई है। ईसा मसीह ने भारत से ही धर्म्म शिक्षा प्राप्त कर ईसाई धर्म्म की स्थापना की थी। ईसाई धर्म्म की शिक्षा प्राप्त कर मुहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म्म की नींव डाली थी। उनका लाइलाह इल्लल्लाह' यह सूत्र 'एको-ब्रह्म' का अनुवाद मात्र है। जर थोस्ती धर्म्म की स्थापना भी वेद मंत्रों के आधार पर हुई थी। कितने ही प्रधान मत तो वेद धर्म्म के रूपान्तर ही हैं। अन्यान्य सभी मत पन्थ और शाखा सम्प्रदाय वेद धर्म्म की शाखा स्वरूप हैं। फ्री मैसन वाले भी अग्नि की स्तुति करते हैं। इन बातों से प्रमाणित होता है कि वेद ही सब धर्म्मों का मूल है।'

(भारत का धार्मिक इतिहास
पृ० ३९६)

भारत-गौरव

Whatever sphere of the human mind you may select as your special study .. . every where you will have to go to India whether you like it or not." मैक्समूलर कृत

(India what can it teaeh us, P.15)

भाषा, धर्म्म, शास्त्र, दर्शन, गणित, विज्ञान आदि किसी भी विषय को आप यदि विशेष अध्ययन के लिए चुनें आप को प्रत्येक दशा में भारत की ही शरण लेनी पड़ेगी चाहे आप उसे पसन्द करें या न करें।

मातृमान, पितृमान आचार्य्यमान पुरुषोवेद

प्राचीन शिक्षा पद्धति का मूल मंत्र ब्राह्मण

ग्रन्थ के इस वाक्य में निहित है 'मातृ मान, पितृ मान, आचार्य मान पुरुषो वेद' अर्थात बालक बालिकाएं अपनी शिक्षाएं सब से प्रथम माता, उसके बाद पिता और तीसरे दर्जे पर गुरु से ग्रहण किया करती हैं। मनोविज्ञान के उच्च सिद्धान्त प्रकट करते हैं कि छोटे बालकों का मन अर्थात वह मस्तिष्क objective mind) जो इच्छा शक्ति का केन्द्र होता है और जिससे मनुष्य इरादा करके काम करता है, चित्त अर्थात उस मस्तिष्क (Subjective mind) की अपेक्षा जिस पर अनिच्छित प्रभाव अंकित हुआ करते हैं बहुत कम विकसित हुआ करता है इसीलिए माता की शिक्षा काल में माता की शिक्षाएं बालक के मन पर कम परन्तु चित्त पर अधिक प्रभाव डाला करती हैं। मन पर जो प्रभाव पड़ा करता है वह तो मन के संकल्पों विकल्पों के संघर्षण में आकर नष्ट सा भी हो जाया करता है परन्तु चित्त पर पड़ा प्रभाव एक प्रकार से अमिट सा हो जाता है। मानवीय शरीर के उन सब मांस पेशियों का सम्बन्ध जिनके द्वारा मनुष्य कुछ किया करता है चित्त (दूसरे मस्तिष्क) से होता है इसलिये चित्त पर पड़ा प्रभाव बिना रोक टोक के काम में आने लगता है। पिता का शिक्षा काल वह होता है जिसमें मन (पहले और मुख्य मस्तिष्क) का विकास शुरू हो जाता है परन्तु वह इतना अधिक विकसित नहीं होता कि जिससे चित्त के काम पर उसका प्राबल्य हो सके अस्तु! पिता की शिक्षा कुछ चित्त पर और कुछ मन पर अपना प्रभाव उत्पन्न किया करती है। मन पर पड़ा शिक्षा का प्रभाव अस्थिर हुआ करता है परन्तु चित्त पर पड़ा शिक्षा का प्रभाव स्थिर और अमिट हो जाता है। गुरु की शिक्षा का समय वह होता है कि जिसमें मन अच्छी प्रकार से काम करता है और चित्त का काम बहुत थोड़ा रह जाया करता है इसलिये गुरु की प्रायः समस्त शिक्षा का प्रभाव मन पर ही पड़ने से वह सभी अस्थिर हुआ करता है इसलिये गुरुओं में माता का दरजा सबसे ऊंचा माना गया है।

(श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की डायरी)

सर्प दंश का इलाज

प्रति वर्ष हजारों भारत वासी सांप के काटने से मरते हैं। इलाज क्या है? सांपों को चेचक का टीका लगाने से वे विष रहित हो जाते हैं परन्तु यह प्रक्रिया खतरे से परिपूर्ण है। अहिंसा वादी भारतीयों को यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए भले ही आरम्भ में कुछ व्यक्तियों की मृत्यु हो जाय। कुछ समय के पश्चात ऐसे सांपों की वा मनुष्यों की उत्पत्ति सम्भव हो सकती है जिनके विष से न तो मनुष्य मर सकेंगे वा जिन पर विष का प्रभाव न हो सकेगा भारत के जीव विज्ञान के पंडितों को इस मानव-सेवा के कार्य में अग्रसर होना चाहिए।

(श्रीयुत जे० वी० ऐस० हैलडन के मैन काइन्ड में प्रकाशित लेख का अवतरण)

स्वर्ग

अमर कोष में लिखा है—स्वर व्ययं स्वर्ग नाक त्रिदिव त्रिदशा लयाः यहां पर स्वः स्वर्ग और नाक इन तीनों शब्दों को पर्याय वाची लिखा है पर स्वः और स्वर्ग दोनों का अर्थ एक कैसे हो सकता है? स्वर्ग का अर्थ है स्वः की ओर जाने वाला। यजुर्वेद अध्याय १३ मंत्र ३१ के अनुसार पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीन को वैदिक साहित्य में स्वर्ग लोक कहा गया है।

(स्वर्ग, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार कृत पृ०२)

महर्षि-जीवन
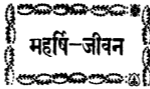
शंका समाधान

विद्या जन्य सुख ही सच्चा सुख है

मेरठ में एक भक्त ने महाराज से पूछा भगवन्! क्या अज्ञान की निवृत्ति और ज्ञान की प्राप्ति से ही सुख होता है ? स्वामी जी ने कहा 'सुख दो प्रकार के होते हैं। एक विद्या जन्य और दूसरा अविद्या जन्य! विद्या जन्य सुख ही सच्चा सुख है। यह सुख अज्ञान की निवृत्ति और ज्ञान की प्राप्ति से होता है। अविद्याजन्य सुख तो पशु आदि जीवों में भी पाया जाता है। जीव एक देशी होने से अल्पज्ञ है इसीलिए अज्ञानी हो जाता है। परमात्मा देश-काल से ऊपर और सर्वज्ञ है। उसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है वह परमानन्द मय, आनन्द घन और पर ब्रह्म है।

फलित ज्योतिष भ्रान्त है

सहारनपुर में लक्ष्मीदत्त नामक एक ज्योतिषी ने महाराज को कहा 'मैं ज्योतिष के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दिया करता हूं, वे उत्तर सच्चे होते हैं।'

इस पर स्वामी जी ने कहा 'ऐसे उत्तर निरे अटकल पच्चू हुआ करते हैं। जैसे एक कौवा उड़ता हुआ जब आम के पेड़ के नीचे से निकला तो अचानक उस पर ऊपर से एक आम टूट पड़ा। उस फल की चोट से कौवा गिर कर मर गया। आम के लगने का ज्ञान न तो कौवे को था और न ही आम जानता था कि मुझ से वह मर जायगा। ऐसी बातें दैव योग से हो जाया करती हैं। आप के प्रश्न कभी दैव योग से सच्चे हो जाते होंगे। यदि गणना से सच्चे होते मानों तो गणित में कोई भूल नहीं होती। उसके सारे नियम शुद्ध हैं परन्तु आप के सारे प्रश्न पूर्ण नहीं होते। गणित नियम से फलित होता तो उसमें भूल कदापि न होने पाती। फलित ज्योतिष को 'काक तालीय' न्याय के तुल्य ही समझना चाहिए।'

जन्म का सूतक शास्त्रानुकूल नहीं है

एक भक्त ने स्वामी जी से पूछा 'जन्म के समग्र जो दस दिन का सूतक माना जाता है क्या वह शास्त्रानुकूल है? स्वामी जी ने उत्तर दिया 'मनुस्मृति के अनुसार तो केवल नव जात बालक की माता ही को एक रात का सूतक होता है बच्चे के पिता तक को भी नहीं होता! यह सूतक पातक का झमेला वैसे भी ठीक नहीं है। इसमें लोग संध्या अग्नि होत्र आदि भले काम भी छोड़ देते हैं। कोई असत्य भाषण और चौर कर्म आदि बुराइयों को तो नहीं छोड़ता। ऐसी रीतियों को मानकर क्या करना जिससे शुभ तो दूर जाय और अशुभ होता रहे।'

आकाश और ब्रह्म दोनों व्यापक होने से एक स्थान में एकत्र कैसे हैं?

स्व० पं० लेखराम जी ने श्री स्वामी जी महा-

बाल-जगत
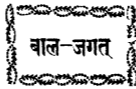
ईश्वर विश्वासी बालक

पाठशाला में गुरु जी लड़कों को बतला रहे थे—भगवान् सर्वव्यापक हैं। जमीन-आसमान पृथ्वी-पाताल, जल-थल घर-जंगल, पेड़-पत्थर, रात-दिन, सुबह-शाम—ऐसा कोई भी स्थान और समय नहीं है, जिसमें भगवान् न हों। वे बाहर-भीतर की सब बातें सभी समय देखते-सुनते रहते हैं। उनसे छपाकर कभी कोई कुछ भी नहीं कर सकता। सुनने वाले विद्यार्थियों पर गुरु जी के उपदेश का बड़ा असर पड़ा। विद्यार्थियों में एक किसान का लड़का भी था। पाठशाला से जब घर लौटकर आया, तब उस के पिता ने कहा 'चलो, एक काम करना है।' वह पिता के साथ हो लिया। किसान उसे किसी दूसरे किसान के खेत में ले गया और बोला 'बेटा' देख इस समय यहाँ कोई देखता नहीं है। अपनी गाय के लिये मैं खेत में से थोड़ी सी घास काट लाता हूँ। ज्यादा होगी तो बेच लेंगे। तू देखता रह, कोई आ न जाय।'

लड़का बैठ गया, परन्तु सोचने लगा 'क्या पिता जी इस बात को नहीं जानते कि भगवान् सब समय, सब जगह सभी बातों को देखते रहते हैं?' किसान घास काटने लगा। कुछ देर बाद उसने पूछा—'बेटा! कोई देख तो नहीं रहा है?' अब लड़के को बोलने का मौका मिल गया। उसने कहा-'पिता जी आपके और मेरे सिवा यहाँ कोई आदमी तो नहीं है' जो हमारे काम को देखे; लेकिन पिता जी! मेरे गुरु जी ने बतलाया था कि ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर, जल-थल में भगवान् व्यापक है और वह सब समय सब की बातें देखता रहता है। कोई कितना भी एकान्त में करे, उससे छिपाकर किसी काम को कर ही नहीं सकता। हम लोग जो यह चोरी करते हैं, इसे भी भगवान् तो देखता ही है।' बच्चे के मुँह से यह बात सुनकर किसान काँप गया। उसके हाथ से हँसिया गिर पड़ा और वह काटी हुई घास वहीं छोड़कर बच्चे के साथ घर लौट आया। उस दिन से उसने चोरी करना छोड़ दिया।

राज का साक्षातकार होने पर उनसे प्रश्न किया 'भगवन्! आकाश और ब्रह्म दोनों पदार्थ व्यापक हैं। ये दोनों एक स्थान में एकत्र क्यों कर रह सकते हैं?'

स्वामी जी ने पास में पड़े हुए एक पत्थर को उठाकर पूछा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? उन्होंने कहा हां अवश्यमेव है। फिर स्वामी जी ने उसी पाषाण खंड में वायु, जल, मिट्टी, आकाश और परमात्मा की व्यापकता पूछी। पंडित जी ने सब की व्यापकता स्वीकार कर ली। तब स्वामी जी ने कहा 'भद्र! आपने समझ लिया कि एक पत्थर में सब पदार्थ व्याप्त हो रहे हैं। इस व्यापकता का सरल सिद्धान्त यह है कि जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह उसमें व्याप्त हो सकता है। परमात्मदेव परम सूक्ष्म हैं। इसलिए वे सब पदार्थों में परिपूर्ण हो रहे हैं।

महिला-जगत्

सुमाताएँ

(लेखक—इतिहास का एक विद्यार्थी)

मन्दालसा का जीवन चरित्र पढ़ने वाले जानते हैं कि उसने अपने तीन पुत्रों को तपस्वी बना दिया था। यद्यपि उनके पिता की इच्छा थी कि वे राज्य के उत्तराधिकारी बनें परन्तु जब उसने अपने पति राजा की इच्छानुसार चौथे पुत्र ऋतध्वज को राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहा तब वह अपने भाईयों के आग्रह पर भी तपस्वी बनकर बन को नहीं गया अपितु राजधानी में आकर राज्य का उत्तराधिकारी बना।

नेपोलियन ने एकबार जब वह लेडी केम्पन के साथ शिक्षा सम्बन्धी विचार कर रहा था कहा था कि अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मातायें अच्छी सुशिक्षिता हों। उन्होंने यह भी कहा कि दृढ़ता, वीरता, नियम बद्धता और न्याय परायणता का क्रियात्मक पाठ मैंने अपनी माता से ग्रहण किया था।

नेलसन इग्लैंड के बड़े नाविक थे। उन्होंने देश-प्रेम, उदारता, उत्साह और निपुणता आदि २ गुण अपनी माता से ग्रहण किये थे।

आलिवर क्रामवेल इंग्लैंडके प्रसिद्ध क्रान्तिकारी को भी दृढ़ पुरुषार्थी और शुद्ध हृदय वाला उनकी माता ने ही बनाया था। क्रामवेल के जीवन चरित्र का लेखक फौरेस्टर (पृ०९) उसकी माता के पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए कहता है उसने अपने हाथ की कमाई से अपनी ५ बेटियों की विवाह के अवसरों पर बहुमूल्य दहेज दिये और उनके विवाह प्रतिष्ठित परिवारों में किए थे और उसीने अपने पुत्र क्रामवेल को अपने सांचे में ढाला था।

डाक्टर स्काट ने (जिसने अपने नाटकों एवं उपन्यासों से अंग्रेजी भाषा की काया पलट दी थी।) एक बार अपने परिचित जार्ज इलियास को लिखा था, मेरे बाप और दादा पशु चराया करते थे। पर दादा बागी और राजा का कृतघ्न सरदार था। इस प्रकार मेरे परिवार में कोई भी उच्च कोटि का शिक्षित व्यक्ति न था परन्तु मेरी माता प्रोफेसर रूदर फोर्ड (एडम्बरा) की पुत्री थी और बड़ी विदुषी एवं चतुर थी। वह बचपन से ही मेरे भीतर उन विचारों को डालती रही जिनसे मेरा पिता अनभिज्ञ था।"

जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक कांट के लिए भी यही बतलाया जाता है कि उनके उच्च कोटि के सदाचारी बनने का श्रेय उनकी माता को ही प्राप्त था।

ये और इस प्रकार की घटनायें प्रकट करती हैं कि बालकों के उत्तम निर्माण के लिए माता का सुशिक्षित होना अनिवार्य है।

सुमन-संचय

सम्मान पद में नहीं मानवता में है

सिकन्दर ने किसी कारण से अपनी सेना के एक सेनापति से रुष्ट होकर उसे पदच्युत करके सूबेदार बना दिया। कुछ समय बीतने पर उस सूबेदार को सिकन्दर के सम्मुख उपस्थित होना पड़ा। सिकन्दर ने पूछा "मैं तुमको पहले के समान प्रसन्न देखता हूं। बात क्या है ?

सूबेदार बोला 'श्री मान् ! मैं तो पहले की अपेक्षा भी सुखी हूं। पहले तो सैनिक और सेना के छोटे अधिकारी मुझसे डरते थे। मुझसे मिलने में संकोच करते थे किन्तु अब वे मुझसे स्नेह करते हैं। वे मेरा पूरा सम्मान करते हैं प्रत्येक बात में मेरी सम्मति लेते हैं। उनकी सेवा करने का अवसर तो मुझे अब मिला है।"

सिकन्दर ने फिर पूछा 'पदच्युत होने में तुम्हें अपमान नहीं प्रतीत होता ?

सूबेदार ने कहा 'सम्मान पद में है या मानवता में ? उच्च पद प्राप्त कर कोई प्रमाद करे, दूसरों को सताये, घूस आदि ले और गर्व में चूर रहे तो वह निन्दा के योग्य ही है। वह तो बहुत तुच्छ है। सम्मान तो दूसरों की सेवा करने में कर्त्तव्य निष्ठ रहकर सबसे नम्र व्यवहार करने और ईमानदारी में है, भले ही वह व्यक्ति सैनिक हो या उससे भी छोटा गाँव का चौकीदार।

सिकन्दर ने कहा 'मेरी भूल पर ध्यान मत देना। तुम फिर सेनापति बनाये गये।

(२)

जीभ को वश में रखना चाहिए

महादेव गोविन्द रानड़े के यहां एक दिन उनके किसी मित्र ने आम भेजे। श्री रानडे की पत्नी रमाबाई ने वे आम धोकर बनाकर रानडे के सम्मुख रक्खे। रानडे ने आम के दो टुकड़े खाकर उनके स्वाद की प्रशंसा की और कहा 'इसे तुम भी खाकर देखो और सेवकों को भी देना। रमाबाई को आश्चर्य हुआ कि उनके पति देव ने आम के केवल दो तीन टुकड़े ही क्यों खाए ? उन्होंने पूछा 'आपका स्वास्थ्य तो ठीक है ?'

रानडे हँसे—'तुम यही तो पूछती हो कि आम स्वादिष्ट है, सुवास्थ्य हैं तो मैं अधिक क्यों नहीं लेता ? देखो ! ये मुझे बहुत स्वादिष्ट लगे इसलिए मैं अधिक नहीं लेता।'

यह अच्छा उत्तर है कि स्वादिष्ट लगता है इसलिये अधिक नहीं लेता है। पति की यह अटपटी बात रमाबाई समझ न सकी। रानडे ने कहा 'तुम्हारी समझ में मेरी बात नहीं आती दीखती। देखो बचपन में जब मैं बम्बई में पढ़ता था तब मेरे पड़ोस में एक स्त्री रहती थी। वह पहले एक धनी परिवार की सदस्या थी। किन्तु भाग्य के फेर से सम्पत्ति नष्ट हो गयी थी। किसी प्रकार अपना, और पुत्र का निर्वाह हो इतनी आय रही थी। वे अनेक बार जब अकेली होतीं तब अपने आप कहती थीं, मेरी जीभ बड़ी चटोरी हो गई है। इसे बहुत समझाती हूँ कि अब चार छः साग मिलने के दिन गए। अनेक प्रकार की मिठाइयां अब दुर्लभ हैं। पकवानों का स्मरण करने से अब कोई लाभ नहीं, फिर भी मेरी जीभ नहीं मानती। मेरा बेटा रुखी सूखी खाकर पेट भर लेता है किन्तु दो तीन साग बनाये बिना मेरा पेट नहीं भरता।"

श्री रानडे ने यह घटना सुनाकर बताया पड़ोस में रहने के कारण उस स्त्री की बातें मैंने बार बार सुनी। मैंने तभी से नियम यह बना लिया कि जीभ जिस पदार्थ को पसन्द करे उसे बहुत ही थोड़ा खाना। जीभ के वश में न न होना। यदि उस देवी के समान दुख न भोगना हो तो जीभ को वश में रखना चाहिये।"

गोरक्षा आन्दोलन

मिथ्या दोषारोपण क्यों ?

[लेखक—श्रीयुत लाला हरदेव सहाय जी]

कुछ भारतीय पश्चिमीय विद्वानों तथा चार्वाक वाम मार्ग से दुष्प्रभावित भारतीयों की लिखी निराधार टीकाओं के आधार पर हिन्दुओं विशेषतया ब्राह्मणों पर गो मांस भक्षण करने, यज्ञों में गोमांस का प्रयोग करने का उल्लेख करके ब्राह्मणों का अनादर करने और गौ हत्या को प्रोत्साहन देने की अनधिकार कुचेष्टा करते हैं। कुछ ऐसे लोगों ने भी जिन्हें वैदिकवाङ्मय का पूरा ज्ञान न था, हिन्दू पक्ष रखते हुए भी विरोधियों के पथ का अनुसरण किया। जो लोग व्यक्तिगत द्वेष के कारण निराधार बातें कहें, उसका भी सार्वजनिक विरोध होना चाहिए। जिन वेद मंत्रों को लेकर गौ मांस भक्षण का समर्थन किया जाता है, कितने ही वेद और वेदांग के विद्वानों ने यह सिद्ध किया है कि जिन मंत्रों का अर्थ गोमांस भक्षण या गौ यज्ञ के समर्थन में किया जाता है, वह ठीक नहीं। अन्य शास्त्रों में गोमांस भक्षण के समर्थन में जो वर्णन मिलते हैं, वह हिन्दू धर्म विरोधियों द्वारा प्रक्षेप के रूप में मिलाये गये हैं।

सरकार का अनुचित पक्षपात

उचित था जिस प्रकार मुसलमान तथा ईसाई व अन्य धर्मों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्य होते हुये भी केवल मात्र धर्म निरपेक्षता की दृष्टि से उनकी भावना को ठेस पहुंचाने वाली बातों को सरकार सहन नहीं करती, उसी प्रकार हिन्दुओं की भावना का आदर करते हुये भी जिस गो को आज करोड़ों हिन्दू आदर की दृष्टि से देखते हैं। जिन वेदों को हिन्दू भगवान का वचन मानते है। उन वेदों के नाम पर ब्राह्मणों को गोमांस भक्षण और गोमांस यज्ञ का किसी भी व्यक्ति, प्रकाशक या लेखक के लिये वर्णन करना वर्जित होना चाहिये। अंग्रेजी राज्य तथा पश्चिमी लेखकों ने हिंदुओं में हीन भावना और गौ के प्रति अश्रद्धा पैदा करने के लिये इन निराधार बातों का प्रचार किया। कुछ भारतीय विद्वान जिन पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव था, या जिन्हें वेद-वाङ्मय का पूरा ज्ञान न था, वह भी इस प्रभाव में बहने से न बच सके। उचित था धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाली कांग्रेस सरकार ऐसे वैमनस्य पैदा करने वाले ग्रन्थों या उनके दूषित अंशो को जब्त करलेती। पर दुःख है कि धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देने वाली सरकार ने गोवध को जारी रख कर हिन्दुओं के हृदय को ठेस पहुँचाने का दुष्कार्य ही नहीं किया, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भगवान बुद्ध पुस्तक जैसे साहित्य के प्रकाशन में भी सहायता दी। जिसमें खुले तौर पर ब्राह्मणों द्वारा गौमांस भक्षण करने का

समर्थन करने तथा हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने की अनधिकार चेष्टा की है। अहिंसा के अवतार बुद्ध, महावीर स्वामी और जैन संतों पर भी मांसाहार का दोषारोपण किया। सरकारी सहायता से प्रकाशित होने वाले साहित्य ऐतिहासिक तथ्य का बहाना करके उसके श्रद्धास्पद स्थानों पर लांछन लगाने से यह स्पष्ट होता है कि सरकार वास्तव में हिन्दुओं की धार्मिक भावना और अहिंसा के सिद्धातों को कुचलने पर उतारू है।

शास्त्रीय प्रमाण

गोवध के विधान को कोई बुद्धिमान तथा निष्पक्ष व्यक्ति नहीं मान सकता। जिन वेदों के आधार पर गोमांस भक्षण करने का समर्थन किया जाता हैं, उस वैदिक वाङ्मय में १३७ बार गो को अघन्या यानि जिसकी कभी हत्या न हो सके लिखा है। अथर्व वेद में निम्न लिखित मंत्र है।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषं
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो असा अवीरहा

(अथर्व १। १६। ४)

इस मंत्र द्वारा गो वध कर्ता को सीसे की गोली से मार देने की आज्ञा दी गई है।

जो वेद गो हत्यारे को गोली से मार देने की आज्ञा देते हैं, जिन वेदों में स्थान स्थान पर गो को अघन्या लिखा, उन वेदों में गोमांस खाने या यज्ञ में व्यवहार करने का उल्लेख होना असम्भव तथा असत्य है।

गांधी जी का निर्णय

गांधी जी वेदों और ब्राह्मणों के भक्त नहीं थे। इस विषय में उनकी निष्पक्ष सम्मति विशेष महत्व रखती है। गांधी जी ने बेलगाँव कांग्रेस के साथ हुई गो रक्षा परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से जो भाषण दिया तथा २५ जनवरी १६२५ के नवजीवन पत्र में छपा वह निम्न लिखित हैं:—

"बहुत समय हुआ मैंने यंग इंडिया' में 'हिन्दुत्व' पर लेख लिखा था। वह मेरा अत्यन्त विचार पूर्वक लिखा हुआ लेख है। उसमें हिन्दुत्व के लक्षणों पर विचार करते हुये वेदादि को मानना पूर्व जन्म में विश्वास रखना और गीता गायत्री आदि में श्रद्धा होना आदि लक्षण बताये हैं। फिर भी सामान्य हिन्दुओं के लिये तो गोरक्षा का प्रेम ही हिन्दुत्व का मुख्य लक्षण ठहराया है। कोई पूछेगा कि दश हजार वर्ष पहले हिन्दू क्या करते थे? बड़े विद्वान और पंडित कहते हैं कि वेदादि ग्रन्थों में गोमेध की बात है। छठे दर्जे में पढ़ते हुये संस्कृत पाठशाला में "पूर्वे ब्राह्मणाः गवां मांसं भक्षयां मासु" यह वाक्य पढ़ा था और मैंने मन से पूछा था कि क्या यह सच होगा। ऐसे वाक्यों के बावजूद मैं मानता हूँ कि वेद में ऐसी बात लिखी हो, तो शायद उसका अर्थ वह न होगा जो हम करते हैं। दूसरी बात भी सम्भव है। मेरे अर्थ के अनुसार अथवा मेरी आत्मा की प्रतीति के अनुसार और मुझे पांडित्य अथवा शास्त्रीय ज्ञान का आधार नहीं है। आत्मा की प्रतीति का ही आधार है— मगर ऐसे वाद विवाद के साथ हिन्दू जनता का कुछ भी सरोकार नहीं। मैंने वेदादि का अध्ययन नहीं किया और अधिकतर संस्कृत ग्रन्थ में अनुवाद से ही जानता हूं, इसलिये मेरे जैसा प्रकृत मनुष्य ऐसे विषय में क्या बात करें? मगर मुझे आत्म विश्वास है और इसलिये में अपने अनुभव की बात हर जगह किया करता हूं। गोरक्षा का अर्थ ढूंढ़ने जावेंगे तो शायद हमें कहीं भी एक अर्थ न मिले, क्योंकि हमारे धर्म में कलमें जैसी सर्वमान्य कोई एक ही चीज नहीं है और पैगम्बर भी नहीं। इससे शायद अपना धर्म समझने में कठिनाई पड़ती हो इतने पर भी उसमें

आसानी है क्योंकि बहुत सी बातें हिन्दू जनता में स्वाभाविक रीति से प्रवेश कर गई हैं। बालक भी समझता है कि हमें गो रक्षा करनी चाहिये, और गो रक्षा न करे तब तक हिन्दू कैसा !"

गांधी जी की निष्पक्ष सम्मति, वेद शास्त्रों के प्रमाण तथा आज भी देश के करोड़ों लोगों की गो के प्रति श्रद्धा की भावना होने पर इतिहास का बहाना करके सरकारी या गैर सरकारी तौर पर ब्राह्मणों के गो भक्षण या गोमांस यज्ञ का प्रचार करना, सत्य और न्याय का खून ही नहीं, राष्ट्र घातक दुर्भावनाओं को प्रोत्साहन देना है ! आश्चर्य है कि सरकार एक धर्म विशेष के लोगों की धार्मिक भावना का आदर करते हुवे "धार्मिक नेता" पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाती है, पर सरकारी सहायता से प्रकाशित महात्मा बुद्ध जैसे साहित्य में जिस गो को करोड़ों लोग श्रद्धा का स्थान मानते हैं, उसका ब्राह्मणों द्वारा मांस भक्षण का उल्लेख करना पक्षपात और अन्याय है। इतिहास की दुहाई देकर ऐसी दुष्टता पूर्ण बातों का प्रचारकरना ठीक नहीं। प्रायः इतिहास लेखकों ने अपनी आंखों देखी स्थिति को नहीं अन्य तथ्यों के सहारे या मन माने ढंग से लिखे हैं। इतिहास की कितनी ही घटनाओं के परस्पर विरोधी वर्णन मिलते हैं। अतः केवल मात्र पक्षपात या दुर्भावना से लिखे इतिहास को प्रमाण मान लेना उचित नहीं। हिन्दुओं की ऐतिहासिक घटनाओं को तोड़ मरोड़ कर हिन्दू द्वेषी लोग नित्य तरह तरह की निराधार बातें इसलिए कहते हैं कि हिन्दू स्वाभाविक तौर पर नर्म और अहिंसक है। यदि यह हिन्दू धर्म विरोधी लेखक प्रकाशक मुस्लिम और ईसाईयों आदि से सम्बन्ध रखने वाले ऐतिहासिक तथ्यों को प्रगट करें तो उन्हें सम्भव है जेल की कोठरी में दिन पूरे करने पड़ें या भारत छोड़कर जाने पर बाध्य किया जाये।

सभ्य और सच्चे राष्ट्रीय व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं कि वह किसी भी धर्म पर कीचड़ उछाले। हमारा कर्तव्य है कि मानवता को महत्व देते हुये धार्मिक कटुता से बचें और उन्हीं बातों का प्रचार करें जो सब के लिये कल्याणकारी हों।

भगवान बुद्ध पुस्तक नाम अच्छा है, पर इसमें हिन्दुओं को नीचा दिखाने के लिये प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दुष्प्रयत्न किया गया है, जो भगवान बुद्ध के विषय में लिखी जाने वाली पुस्तक में नहीं रहना चाहिये।

उचित होगा राष्ट्र के महान हित, सत्य तथा न्याय को दृष्टि में रखते हुये महात्मा बुद्ध जैसी सब तथा विशेषतया सरकारी सहायता से छपने वाली पुस्तकों का प्रकाशन बन्द हो, जो छप गई हैं वह जब्त कर ली जायें। जनता से प्रार्थना है कि शान्तिमय आन्दोलन द्वारा इस राष्ट्र घातक दुष्कार्य के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के लिये जनमत जाग्रत और संगठित करें।

वैदिक धर्म और ईसाई मत
ईश्वरवाद विषयक तुलनात्मक अनुशीलन

(लेखक—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड
श्री श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान गुरुकुल काङ्गड़ी)

वैदिक धर्म एक सार्वभौम, युक्ति सङ्गत वैज्ञानिक धर्म है जिसकी ईश्वर विषयक शिक्षा निम्नलिखित है :—

(१) एक परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिये जो सर्व व्यापक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी और दयालु है। वह परमेश्वर निराकार निर्विकार अजन्मा है। सर्वशक्तिमान् होने के कारण उसे कभी शरीर धारण करने की आवश्यकता नहीं। उस को उपासना का वेद—

य एक इत् तमु दुहि कृष्टीनं विचर्षणिः।
पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥ ऋ० ६।४५।१६

मा चिदन्यद् विशंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्र मित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥ ८।१।१

इत्यादि स्पष्ट शब्दों में उपदेश करते हैं कि हे मनुष्य तू उस एक परमेश्वर की ही स्तुति कर जो एक ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् और जगत् का स्वामी है। 'एकः इत्' इन शब्दों से एक परमेश्वर की पूजा का भाव अत्यन्त स्पष्ट है।

'माचिदन्यद् विशंसत इस मन्त्र का अर्थ है कि हे मित्रो! अन्य किसी की भी तुम स्तुति और उपासना मत करो और इस प्रकार औरों की स्तुति उपासना कर के दुःख मत उठाओ। प्रत्येक शुभ कर्म में सर्व सुख वर्षक परमेश्वर की ही बार २ स्तुति करो अन्य किसी की नहीं। वेदों के— एकं सद् विप्रा—

बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।
ऋ० १।१६४।४६

इत्यादि मन्त्रों के अनुसार अग्नि, मित्र, वरुण, यम, मातरिश्वा आदि नामों को प्रधानतया उस एक ही परमेश्वर के भिन्न २ गुणों और शक्तियों को सूचित करने के लिये विद्वान् लोग प्रयुक्त करते हैं। उस परमेश्वर का स्वरूप वेद में इन शब्दों में बताया गया है—

सपर्य गाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो ऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ यजु० ४०।८

अर्थात् वह परमेश्वर जिसे ज्ञानी भक्त प्राप्त करता है सर्वशक्तिमान् सर्वथा निराकार, निर्विकार, नसनाड़ी के बन्धनरहित, शुद्ध, निष्पाप, सर्वज्ञ, मनका साक्षी, सर्वव्यापक और स्वयम्भू है। वह जीवरूपी अपनी सनातनप्रजा के कल्याण के लिये सब पदार्थों को यथार्थ-रूप से बनाता और वेदों के द्वारा उन का उपदेश करता है। वेदों की ईश्वर विषयक इस शिक्षा का ही वैदिक धर्मोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वितीय नियम में इन शब्दों द्वारा प्रतिपादन किया:—

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

ईसाई मत की ईश्वर विषयक कल्पना:—

इस के साथ जब हम ईसाई मत की ईश्वर विषयक कल्पना की तुलना करते हैं तो उस में आकाश पाताल का अन्तर पाते हैं। ईसाई पुराने धर्मशास्त्र (Old Testament) और नये धर्म शास्त्र (New Testament) इन दोनों को जिन में ६० के लगभग पुस्तकों का समावेश है ईश्वरीय ज्ञान के रूप में मानते हैं यद्यपि उन में परस्पर विरोध बहुत अधिक पाया जाता है जैसे कि मान्य श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने 'इंजील के परस्पर विरोधी वचन' इस पुस्तक में जो आर्य युवक सङ्घ दरियागंज देहली द्वारा प्रकाशित और सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज देहली में मुद्रित है १२५ विषयों पर वाक्यसंग्रह करके दिखाया है। पुराने धर्मशास्त्र में ईश्वर की एक अल्पज्ञ ईर्षालु मनुष्यवत् कल्पना की गई है जिसे अंग्रेजी में Anthromorphic Conception के नाम से कहा जाता है। इसे स्पष्ट करने के लिये मैं बाइबल के निम्न लिखित वाक्यों को 'बाइबल सोसाइटी आफ इन्डिया' इलाहबाद द्वारा सन् १९५० में प्रकाशित संस्करण में दिये अनुवाद सहित पाठकों के सन्मुख रखना पर्याप्त समझता हूँ जिससे यह न कहा जाये कि हमने इन वाक्यों का मन गढ़न्त अर्थ कर लिया है। Genesis (उत्पत्ति की पुस्तक) के अध्याय ३ में लिखा है:—

'They (Adam and Eve) heard the voice of the Lord God walking in the garden in the cool of the day and they hid themselves from the presence of the Lord God amongst the trees of the Garden.

(Genesis 3.8)

अनुवाद—आदम और हव्वा को तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द सुनाई दिया तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गये। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा तू कहाँ है? उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि कि मैं नंगा था इसलिये छिप गया इत्यादि

(पुराना धर्म नियम उत्पत्ति पृ०३)

इसी अध्याय की २२ से २४ तक की आयतों में लिखा है: –

22. The Lord God said 'Behold, the man has become as one of us to know good and evil, and now lest he put forth his hand and take also of the tree of life and eat and live for ever.

23. Therefore the Lord God sent him forth from the garden of Eden.

24. So he drove out the man, and he placed at the east of the garden of Eden, Chambins and a flaming sword, which turned every way to keep the way of the tree of life."

अनुवाद:—फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए अब ऐसा न हो

कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खाले और सदा जीवित रहे। तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया और जीवन के वृक्ष का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को और चारों ओर घूमने वाली ज्वाला मय तलवार को भी नियुक्त कर दिया:—

(उत्पत्ति की पुस्तक अ० ३ पृ० ३)

परमेश्वर को पश्चाताप:—

इसी उत्पत्ति की पुस्तक के अ० ६ में लिखा है:—

'And it repented the Lord that he had man on the earth and it grieved him at his heart. And the Lord said, I will destroy man whom I have created from the face of the earth— for it repented me that I have made him.

(Genesis Chapter 6, 6-7)

अनुवाद:—और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथिवी के ऊपर मिटा दूंगा। इत्यादि

उत्पत्ति की पुस्तक अ० ६।६-७ पृ०४

ईर्ष्यालु परमेश्वर भाषाओं में गड़बड़ी डाल देता हैं:—

Genesis (उत्पत्ति पुस्तक के पृ० ११ में लिखा है:—

"Lord came down to see the city and the tower, and the Lord said, 'Behold, the people is one and they have all one language and this they begin to do, and now nothing will be restrained from them, which they have imagined to do.

Go to, let us go down and then confound their language that they may not understand one another's speech.

So the Lord scattered them abroad and then left off to build the city." (Genesis Chap. XI 5-8)

अनुवाद:—

सारी पृथिवी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी।

जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया और जितना वे करने का यत्न करेंगे उनमें से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा इसलिये आओ हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें। इस प्रकार यहोवा ने उनको, वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया।

(उत्पत्ति की पुस्तक अ० ११ पृ० ९)

ईश्वर का बछड़े का मांसादि खाना:—

उत्पत्ति की पुस्तक के अ० १८ में वर्णन आता है कि अब्राहम ने यहोवा (ईश्वर) को दो और अतिथियों के साथ जो उसके घर आये थे बछड़े को मारकर खिलाया और उन्होंने उसे खाया। अंग्रेजी बाइबल के शब्द निम्नलिखित हैं:—

18/7. And Abraham ran into

the herd and fetched calf, tender and good.

8. And he took butter and milk and the calf which he had dressed and set it before them (the Lord being one of them) and they **did eat.** (Genesis Chap. 18/7-9)

अनुवाद:-इब्राहीम गाय बैल के झुन्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया और उसने फुर्ती से उस को पकाया। तब उसने मक्खन और दूध और वह बछड़ा जो उसने पकाया था लेकर उनके आगे (यहोवा वा यहूदियों का ईश्वर भी उनमें मनुष्य आकार में था) परोसदिया और वे खाने लगे। तब ईश्वर ने पूछा कि तेरी पत्नि सारा कहां है? उसने कहा वह तो तम्बू में है। उस ईश्वर ने कहा मैं वसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास आऊंगा तब तेरी पत्नि सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा। इत्यादि

(उत्पत्ति की पुस्तक पृ० १३ अ० १८)

अल्पज्ञ क्रूर ईश्वर:—

Exodus (निर्गमन की पुस्तक) के अ० १२ में यहूदियों के प्रति यहोवा (ईश्वर) की निम्न उक्ति पायी जाती है:-

12. 1?. I will pass through the land of Egypt this night and will smite all the first born in the land of Egypt, both man and beast, I am the Lord.

13. And the blood shall be to you for a token upon the houses where ye are and when I see the blood, I will pass over you and the plague shall not be upon you to destroy you."

(Exodus Chap. 12/12-13)

अनुवाद:-१२-१२ 'उस रात को मैं मिश्र देश के बीच में होकर जाऊंगा और मिश्र देश के क्या मनुष्य, क्या पशु, सबके पहिलौठों, (पहले बच्चों) को मारूंगा। मैं तो यहोवा (ईश्वर) हूँ।

१३ "और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा, अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुमको लांघ के जाऊंगा और जब मिस्र देश के लोगों को मारूंगा तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे" इत्यादि

(निर्गमन की पुस्तक अ० १२ पृ० ५८)

इसी अध्याय की आयत २९ में फिर लिखा है:-

29. "And it came to pass that at midnight the Lord smote all the first born in the land of Egypt.

(Exodus Chap. 12,29)

अनुवाद:-"और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर, गढ़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सबके पहिलौठों को, वरन पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला।

(निर्गमन की पुस्तक अ० १२-२९ पृ० ५६

ईश्वर के अपने ईर्ष्यालु होने की घोषणा:-

Exodus (निर्गमन की पुस्तक के अ० २०-५ में यहोवा ने अपने विषय में बड़े गर्व के साथ यह घोषणा की है:-

(g) I the Lord thy God, am a jealous God, visiting the iniquity, of the fathers upon the children upto the third and fourth gene-

ration of them that hate me."

(Exodus Chap. 20/5)

अनुवाद:-"मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं और जो मुझ से बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दन्ड दिया करता हूं।"

(निर्गमन की पुस्तक अ० २०-५ पृ० ६६)

ईश्वर का मनुष्य की तरह बातें करना:-

Exodus (निर्गमन पुस्तक) के अ० ३३ में ईश्वर का मूसा के साथ आमने सामने मनुष्य मित्र की तरह बातें करने का निम्न शब्दों में वर्णन आता है:—

33. "The Lord spoke unto Moses face to face as a man speaketh unto his friend."

(Exodus Chap. 33/11)

अनुवाद—यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने सामने बात करता था जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे।

(निर्गमन की पुस्तक अ० ३३-५ पृ० ७९)

विस्तार भय से हम बाइबिल में से अन्य उद्धरणों के देने के प्रलोभन का संवरण करते हैं। इन उद्धरणों पर किसी टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। इनसे यह स्पष्ट है कि ईसाईयों की पुरानी धर्म पुस्तक के अनुसार ईश्वर एक ऐसे मनुष्य की तरह है जो एक देशी, अल्पज्ञ, क्रूर, ईर्ष्यालु और अन्यायी है। उसने छः दिनों में सृष्टि का निर्माण किया और सातवें दिन थकावट को दूर करने के लिए आराम किया जैसे कि Genesis (उत्पत्ति पुस्तक के अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि

God ended his work which he had made and rested on the seventh day." (Genesis 2.2)

अनुवाद—"परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उसने अपने किये हुये सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।" (उत्पत्ति की पुस्तक २-२ पृ०२)

ईश्वर की ऐसी अल्पज्ञ अत्याचारी, अन्यायी, क्रूर मनुष्यवत् कल्पना को कौन बुद्धिमान् स्वीकार कर सकता है इस कल्पित ईश्वर की आज्ञासे मूसा आदि पैगम्बरों ने जो क्रूरतापूर्ण काम किये उनका हम वर्णन करना नहीं चाहते।

नये धर्म नियम की ईश्वर कल्पना

बाइबल के New Testament वा नये धर्म नियम नामक भाग में पुराने धर्म नियम को भी ईश्वरीय मानते हुये उस कल्पना को अमान्य नहीं ठहराया गया किन्तु उसमें कुछ सुधार अवश्य किया गया है। नयी धर्म पुस्तक का ईश्वर क्रूर अत्याचारी शासक के स्थान में दयालु पिता के रूप में माना गया है। जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है हम उसकी प्रशंसा करते हैं किन्तु इसको जो ईसामसीह की नवीन कल्पना समझते हैं वे बड़ी भूल में हैं यह हम कहना चाहते हैं। वेदों में ईश्वर को 'त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासिन:' "यो न: पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।" स नो बन्धुर्जनिता स विधाता (यजु० ३२-८)

स न: पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनोभव॥ (ऋ० १-१-६)

इत्यादि मन्त्रों में न केवल प्राणिमात्र का पिता बताया गया है बल्कि उसे

त्वं हि न: पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे।

त्वं त्राता तरणे चेत्योभू: पिता मातासद-मिन्मानुषत्याप्ता इत्यादि द्वारा मङ्गलमयी प्रेममयी माता के रूप में भी माना गया है जो अति श्रेष्ठ विचार है।

परन्तु ईसाइयों के इस नये धर्म नियम का ईश्वर भी सर्व व्यापक, सर्वज्ञ और न्यायकारी

नहीं है। उसे बाईबिल के अधिकतर भागों में आकाश में बैठा माना गया है। नयी धर्म पुस्तक के मार्क १६-१९ में ईसामसीह के विषय में स्पष्ट लिखा है कि

"So then after the Lord had spoken unto them, he was received up into Heaven and sat on the right hand of God"

(Mark 16–19)

बाइबिल सोसाइटी इलाहबाद द्वारा सन् १९५० में प्रकाशित हिन्दी संस्करण में इसका अनुवाद इन शब्दों में दिया है:—

"निदान प्रभु यीसु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।

(मरकुस रचित सुसमाचार पृ० ४६)

इस प्रकार के वाक्यों से स्पष्ट है कि ईसाइयों के नये धर्म नियम (New Testament में वर्णित ईश्वर भी सर्वव्यापक नहीं किन्तु स्वर्ग वा आकाश में एक जगह पर बैठा हुआ है जिसकी दाहिनी ओर ईसामसीह जाकर बैठ गया।

(क्रमशः)

❀

उपासना अष्टक

लेखक—शास्त्रार्थ केसरी, सिद्धान्त मार्तण्ड पं० अमरसिंह जी "अमर" आर्य पथिक

आप निरन्तर छू रहे, प्रभु मेरे सब गात।
यह निश्चय करके "अमर" शुद्ध रहूँ दिन रात ॥१॥
तुम तो मुझको छू रहे, मुझको लगती लाज।
मैं अशुद्ध तुम परम शुचि, 'अमर" सुधारो साज ॥२॥
मेरे मन में आपका है, हर समय निवास।
यत्न करूंगा "अमर" यह पाप न आवे पास ॥३॥
जगदीश्वर हैं हृदय में, करके यह विश्वास।
"अमर" न आने दूं कभी, द्वेष दम्भ को पास ॥४॥
प्रभु प्रकाश के पुंज हैं, करते ज्ञान प्रकाश।
करो "अमर" अज्ञान के अन्धकार का नाश ॥५॥
दयासिन्धु के निकट है, निर्दय का क्या काम।
यह विचार करके "अमर" बनो दया के धाम ॥६॥
सदा न्याय करते "अमर" प्रभु हैं दया निधान।
सब अन्याय विसार के भक्त भजे भगवान् ॥७॥
मैं सुपुत्र हूँ आपका आप सु पिता महान्।
"अमर" न इस सम्बन्ध को तोडें हे भगवान् ॥८॥

* शंका समाधान *
वृक्षों में जीव नहीं

जौलाई १९५६ के सार्वदेशिक अंक में बदायूं के श्री लाखन सिंहजी का एक लेख है उसमें लिखा हैं 'वृक्षों में जीव है तो मैं यह बता देना चाहता हूँ की वृक्षों में जीव नही है,

१—इच्छा

वैद्य जी कहते हैं कि पानी न मिलने पर वृक्षादि बनस्पतियां मुर्झाने लगती है, जिससे उनकी प्राप्त करने की इच्छा प्रकट होती है, सो वैद्य जी तालाब या गड्ढा में जो पानी रहता है वह सूखने पर जमीन भी फटने लगती है, और वो जमीन भी पानी चाहिये ऐसी इच्छा प्रकट करती है,

२—द्वेष

एक बड़े पेड़ के नीचे किसी छोटे पौधे को लगाइये तो वह उस पौधे को पनपने नही देगा,

हमारे यहाँ एक बड़ा बेर का पेड़ है, उसके नीचे एक निंबू का' कनेर का, मेंहदी का, इत्यादि छोटे झाड़ अभी जीवित हैं,

३—प्रयत्न

एक गुलाब के फूल का झाड़ लीजिये उसमें आप बताईये कि एक जीव है या अनेक, क्यों कि गुलाब की एक झाड़ की कई कलम करके कई जगह लगा दीजिये, वो सब अलग अलग लग गई, अब वैद्य जी बताईये कि जीव झाड़ में रहा या कई कलम में चला गया, उसी प्रकार गन्ना का हाल है, कई टुकड़े टुकड़े लग जाते हैं, तो आप बताइये कि ये कैसा जीव रहा,

आपने प्रसिद्ध भारतीय विज्ञानवेत्ता सर जगदीशचन्द्र बोस का अनुसन्धान, जो बताया हैं कि इन्होंने भी वृक्षादि बनस्पतियों का परस्पर वार्तालाप करना और सुख-दुख अनुभव करना आदि सिद्ध किया है कि इसका यह मतलब नहीं की, उसमें जीव है, क्यों कि गंगा और यमुना का जहां संगम है वहां पर भी उनका अलग अलग पानी मालूम पड़ता है, तो पानी भी जानदार है, और आपके कहे मुताबिक उसमें भी जीव मानना पड़ेगा।

आपने महर्षि कपिल का उदाहरण देकर बतलाया कि स्थावर शरीर उद्भिज कहलाते है और वह दो प्रकार के होते हैं एक बीज से उत्पन्न होने वाले दूसरे शाखा से उत्पन्न होने वाले।

वैद्यराज जी आपको मालूम हो कि कई झाड़ ऐसे भी है जो एक का नाम मैं दे रहा हूं, इधर के जंगल में एक 'अधर बेल, नाम का बेल होता है' उस का न झाड़ रहता है, और ना कलम लगती है, वो आप ही आप झाड़ के ऊपर होता है, यह अधर बेल धात की दवाई में भी काम आता है, तो आप का महर्षि कपिल का प्रमाण देना भी गलत साबित होता है,

अब आप जल, अग्नि, हवा, इत्यादि को लीजिये इसमें जीव नहीं हैं, लेकिन इससे भी बड़े बड़े नुकसान व फायदे होते हैं।

इस पर से यह सिद्ध होता है कि वृक्षों में जीव नही हैं।

आप कृपया पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय की पुस्तक जीव के विषय में पढ़िये सो आप का भ्रम दूर होजायेगा।

— कमला प्रसाद दुबे (द्विवेदी)
उपमंत्री आर्य समाज बल्हारपूर

———

विदेश प्रचार

आर्यसमाज मोम्बासा (पूर्व अफ्रीका) का ४८ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मोम्बासा का ४८ वां वार्षिकोत्सव २२,२३ और २४ दिसम्बर १९५६ को बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। १५ से २१ दिसम्बर तक सम्पूर्ण यजुर्वेद से श्री स्वामी ध्रुवा नन्द जी महाराज जी की अध्यक्षता में महायज्ञ सायं व प्रातः होता रहा, और श्री स्वामी जी की वेदकथा सायंकाल को होती थी, उत्सव में श्री स्वामी जी, पं० धर्मेन्द्रनाथ जी विद्यालंकार, श्री पं० सत्य देव जी विद्यालंकार, श्री विनयकुमार जी वेदालंकार, श्री आचार्य अर्जुन देव जी श्री शक्ति प्रसाद जी शारद, श्री पं० सूर्य कौल जी शर्मा व श्री अनन्त जी शास्त्री के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। उत्सव में बाल धर्मशिक्षा प्रतियोगिता, आर्य सम्मेलन; वाद विवाद, पारिवारिक सम्मेलन, भारतीय सांस्कृतिक फिल्म शो आदि समारोह विशेष प्रशंसनीय और आकर्षक थे, यज्ञ पर प्राप्त समस्त दक्षिणा श्री स्वामी ध्रुवा नन्द जी और यज्ञिकों ने सार्वदेशिक सभा देहली को वेद-प्रचार निधि में भेज दी है, श्री स्वामी जी ने यहां पर अन्य कई आर्य परिवारों में गृह यज्ञ करवाये, और उन की भी प्राप्त दक्षिणा श्री स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा देहली को भेज दी है।

आर्यसमाज मोम्बासा की स्थापना ५० वर्ष पूर्व हुई थी, और यह आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्व अफ्रीका से सम्बन्धित है, इस के १२० सभासद हैं, और इस के पास अनुमानतः पांच लाख शिलिंग की स्थायी सम्पत्ति है। लगभग दो हजार शिलिंग मासिक किराये के रूपमें समाज को आय होती है। आर्य-समाज के पास यहां एक विशाल अतिथि गृह भी है, जिस से देश विदेश के अनेकों यात्री लाभ उठाते हैं।

इस वर्ष आर्यसमाज अपना एक सुन्दर और विशाल मन्दिर निर्माण करने वाला है, जिस पर डेढ लाख शिलिंग व्यय किया जायेगा।

श्री अनन्त, शास्त्रीः
मन्त्री, आर्यसमाज मोम्बासा;

दारासलेम

आर्य समाज दारा सलेम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बहुत कृतज्ञ है, कि उसने श्री स्वामी ध्रुवा नन्दजी को यहां भेजा।

स्वामी जी २१ नवम्बर शाम को चार बजे ट्रेन से दारासलाम स्टेशन पर पहुंचे समाजके अनेक सदस्यों ने स्टेशन पर स्वागत किया। रात्रि को समाज मन्दिर में स्वामी जी का भाषण हुआ। व्याख्यानका विषयथा ऋषिदयानन्दजी द्वारा निर्मित भगवत भक्ति का प्रकार ही सर्व उत्तम है।

२२ नवम्बर को स्वामी जी यहां से टांगा चले गए, वहां से लौट कर २८ को यहां पहुचे, २८ की रात्रि में केवल आय समाज के सदस्यों को बुला कर पांच बातें बताई :—

(१) आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य रात्रि को सोते समय अवश्य यह सोचे कि क्या मैंने आज कोई ऐसा काम किया है, जिस से आर्य समाज का गौरव गिरे।

(२) आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य कम से कम

एक बार सह परिवार सम्मिलित सन्ध्या करें।

(३) आर्य समाज के प्रत्येक साप्ताहिक सत्संग में सपरिवार सम्मिलित हो।

(४) आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में आकर अपना मासिक अथवा वार्षिक चन्दा समाज के कोषाध्यक्ष अथवा मन्त्री को दे, और वह अधिकारी इस चन्दे की रसीद दान दाता को दूसरे अधिवेशन में दे दे।

(५) आर्य समाज के मन्त्री और प्रधान साप्ताहिक सत्संग के नियत समय से कम से कम एक मिनिट पूर्व आर्य समाज में आ जाय, और देखे, और सोचे, कि आज कौन सदस्य अधिवेशन में नहीं आया, और क्यों ॥

इन्हीं पांच बातों पर दो घन्टे तक विचार होता रहा। अन्त में यह विचार स्थिर रहा, कि पहली बात यद्यपि मुश्किल है, फिर भी अभ्यास करने का यत्न किया जाय। किन्तु अन्य चार बातों को शीघ्र ही शुरू करने में कोई हानि नहीं है! शान्ति पाठ के बाद यह कार्यवाही समाप्त हुई, कार्य वाही की समाप्ति पर श्री माधव जी विश्राम (बहुत पुराने आर्य सदस्य) ने कहा, कि जिस चर्चा को आज से तीस वर्ष पूर्व स्वर्गीय अचार्य रामदेव ने अपने ढंग से बताया था, उस बात को तब से अब तक किसी भी यहां आने वाले साधु या उपदेशक ने नहीं समझाया। श्री स्वामी ध्रुवा नन्द जी का हम सब सदस्य बहुत ही धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने निहायत ही उत्तम ढगंसे पांचबातों को समझाया।

श्री भाई लाल भाई ठक्कर (भूत पूर्व प्रधान आर्य समाज दारा सलाम) ने स्वामी जी से पूछा कि क्या कोई दूसरा दयानन्द पैदा हो गया जो कि तैयारी कर रहा है! जो कुछ दिनों के बाद प्रगट होगा, स्वामीजी ने उनसे कहा, मुझे तो मालूम नहीं। है, हां भारत धर्ममन्डल काशी के संस्थापक स्वामी ज्ञाना नन्द जी के शिष्य भी एक स्वामी दयानन्द थे, भारत धर्म मन्डल काशी तो अभी है! परन्तु वह दोनों के देहान्त हो चुके हैं। आप को कैसे ज्ञात हुआ, कि स्वामी दयानन्द जी ने जन्म लिया है! भाई लाल जी ने स्वामी जी को बताया, कि स्वामी विद्या नन्द जी विदेह अजमेर वाले यहां आये थे, उन्होंने बातचीत के प्रसंग में मुझ से कहा था कि दयानन्द जी ने जन्म ले लिया है और तैयारी कर रहा है! कुछ दिनों के बाद वह संसार की जनता के सामने आ जायगा, और मुस्कराते हुए यह भी कहा था, कि अभी उसका नाम और पता बताना ठीक नहीं यह सुन कर स्वामी जी महाराज ने यह कहा कि इस का उन्हीं को पता होगा, अथवा आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को लिखकर पूछें, सम्भव है, कि उन को किसी प्रकार की सूचना मिल चुकी होगी।

स्वामी जी पांच दिसम्बर तक दारासलाम में रहे, उनके व्याख्यान सुनने के लिए दारासलाम के काफी लोग आते रहे। स्वामी जी अपने व्याख्यानों को इतने सरल और मधुर तरीके से बताते रहे, कि दारासलाम की समस्त जनता इस से प्रभावित हुई, ६ दिसम्बर को स्वामी जी जंजवार चले गए।

हरप्रसाद शर्मा मन्त्री आर्य समाज दारासलाम

मौरीशस

सार्वदेशिक सभा ने पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज को सकुशल यहांपर पहुंचा दिया इस लिये हम मौरिशस आर्य सभा की तरफ से सभा को धन्यवाद देते हैं।

यद्यपि श्री स्वामी जी महाराज किसी भी प्रदर्शन को पसन्द नहीं करते परन्तु हम ने अपना कर्तव्य समझ कर उसे कर ही डाला अर्थात् लगभग ५०० स्त्री पुरुषों के बीच हम ने उन का स्वागत् एरोड्रोम पर किया और आज रविवार ता० ६ जनवरी को आर्य भवन में करीब दो हजार नर नारियों के बीच समस्त समाज की ओर से उसका स्वागत किया गया, कल उपदेशक मण्डल की ओर से उन का स्वागत होगा, और ८ ता० से समाजों में उनके व्याख्यान होंगें, प्रतिदिन उपदेश होगा।

मन्त्री आर्य सभा मौरीशस

सूचनाएं तथा वैदिक धर्म्म प्रसार

गुरुकुल कांगड़ी

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्रीयुत चिन्तामणि द्वारकानाथ देश मुख का गुरुकल वार्षिक महोत्सव पर जो १२ से १५ अप्रैल तक मनाया जायगा दीक्षान्त भाषण होगा।

जो सज्जन अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहते हों वे आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय जिला सहारनपुर से नियमावली और प्रवेश फार्म मंगाकर शीघ्र स्वीकृति प्राप्त करलें।

कन्या गुरुकुल महा विद्यालय हाथरस

२२, २३, और २४ दिसम्बर ५६ को गुरुकुलोत्सव ससमारोह मनाया गया। २२ दिसम्बर को संस्कृत कालेज बनारस के प्रमुख निरीक्षक श्री प्रकाशचन्द्र जी गौड़ की अध्यक्षता में संस्कृत भाषा सम्मेलन हुआ जिसमें छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर भाषण दिये। २३ दिसम्बर को श्रीमती प्रभावती काव्यतीर्थ की अध्यक्षता में वाद विवाद प्रतियोगिता हुई तथा उत्तर प्रदेश के माननीय कृषि मन्त्री की संरक्षता में दीक्षान्त समारोह हुआ। २४ दिसम्बर को नवीन छात्राओं का प्रवेश हुआ तथा मध्यान्होत्तर श्रीमती हेमलता जी की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ। रात्रि में श्री देशराज जी के भजन हुए।

आर्य वीर दल

उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति श्री सुखदेव जी शास्त्री ने मन्डल मेरठ के समस्त आर्य वीर-दल से सम्बद्ध अधिकारियों को आदेश दिया है कि इस मंडल में दल प्रचार मन्त्री के पद पर श्री विश्वनाथ जी आर्य वीर विहार रत्न को ३०-१२-५६ से नियुक्त कर दिया गया है।

विविध विवरण

—२३-१२ ५६ को आर्य समाज खंडवा में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। सम्मिलित वृहत यज्ञ हवन तथा संध्या के बाद श्री सुखराम आर्य के उपदेश पूर्ण भजन हुए तथा श्री राम कृष्ण जी राय श्री डा० रघुनाथ सिंह जी आदि के भाषण हुए।

—आर्य समाज गंगापुर की ओर से दिनाङ्क १६ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक रात्रि में श्री कृष्णजी प्रभात आश्रम मेरठ द्वारा वेद प्रचार किया गया। स्थानीय हायर सेकेन्डरी स्कूल के छात्रों के सामने भी व्याख्यान दिया गया। प्रभाव अच्छा रहा।

—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाएं १० व १७ फरवरी ५७ को होंगी आवेदन पत्र तथा नियमावली के लिए मुरादाबाद कार्यालय से पत्र व्यवहार करें।

—आर्य समाज वजीरबाग श्रीनगर काश्मीर द्वारा श्री पं० इन्द्रसेन जी प्रेमी ने श्रीनगर काश्मीर में वैदिक धर्म प्रचार किया तथा धर्मार्थ औषधि वितरण करके अनेक नर नारियों को लाभ पहुंचाया। लगभग ३०० व्यक्तियों से मांसाहार छुड़वाया। १८१ परिवारों में यज्ञ सत्संग द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया ११ संस्कार कराए। डी० ए० वी० हाई स्कूल आर्य कन्या पाठशाला आदि २ में आर्य समाज का संदेश पहुंचाया। राधाकृष्ण मंत्री

—आर्य समाज गोहाना में २३-१२-५६ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया। श्री प्रभुदत्त जी शास्त्री तथा श्री चमन लाल जी के भाषण हुए। श्री साधुराम जी का भजन हुआ।

— आर्य समाज रक्सौल (चंम्पारन) का बत्तीसवां वार्षिक उत्सव २८-२९-३० दिसम्बर को मनाया गया।

—श्री पं० गंगाधर जी शास्त्री जी पं० हरि प्रसाद शास्त्री पं० रामदेव शास्त्री श्री मुनिलाल जी, श्री महानंद सिंह जी, श्री वीरेन्द्र सिंह, श्री जयपाल सिंह, श्री रामकान्त, श्रीमती विद्यादेवी कुमारी धर्मशीला आदि २ के व्याख्यान हुए।

—आर्य समाज नयाबाँस देहली का वार्षिकोत्सव १६-१७ फरवरी को कम्पनी बाग (बाग दीवार) में मनाया जायगा। ११ फरवरी से प्रातः अथर्व वेद के मन्त्रों द्वारा महायज्ञ श्री आनन्द भिक्षु जी की अध्यक्षता मे होगा तथा सांयकाल श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री जी द्वारा वेदों की कथा प्रतिदिन हुआ करेगी।

—आर्य समाज पानीपत ने २९-१२-५६ को श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

—आर्य समाज अहमद नगर (बम्बई) की ओर से १४-१२-५६ से आर्य विद्वान श्री आचार्य मुनि मेधाव्रत जी (दिव्य कुंज येवला) के अहमद नगर सनातन धर्म सभा की प्रार्थना पर वेद, उपनिषद गीता पर स्थानीय कालेश्वर मन्दिर में ७ दिन तक मराठी तथा संस्कृत में प्रवचन होते रहे।

—आर्य आयुर्वेद रसायन शाला गुरुकुल झज्झर के आचार्य श्री भगवानदेव जी द्वारा सेन्ट्रल बैंक के प्रांगण में तथा मिलिटरी के मन्दिरों में वैदिक धर्म प्रचार हुआ। मिलिटरी में श्रीमान कर्नल शमशेरजंग बहादुर तथा मेजर बालक सिंह जी ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। इस सब कार्य में श्री धन राज जी तलवाड तथा सारदा सेठ जी ने तन मन धन से सहायता दी।

—१३-१-५७ को ईसाई प्रचार निरोध समिति जयपुर का निर्वाचन हुआ। प्रधान श्री उग्रसेन तथा मन्त्री श्री पृथ्वी दत्त जी चुने गये।

शुद्धि

२-१२-५६ को बांकनेर (नरेला) में श्रीयुत मा० पोहकर मल जी कार्यकर्त्ता सार्वदेशिक सभा तथा श्री पं० वासुदेव जी के सहयोग से ३५ ईसाई परिवारों की शुद्धि की गई। इस अवसर पर श्रीयुत ला० रामगोपाल जी मंत्री सार्वदेशिक सभा तथा श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी मन्त्री सार्वदेशिक ईसाई प्रचार निरोध समिति उपस्थित थे जिनके प्रयत्न से यह समारोह सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। देहली से श्री वेदीराम जी श्री ओ३म प्रकाश जी कपड़े वाले तथा श्री राजसिंह जी सपरिवार वहां पहुँचे थे। श्री पुरुषार्थी जी तथा श्री ला० रामगोपाल जी के भाषण हुए। आर्य समाज नरेला के कार्य कर्ताओं ने पूरा २ सहयोग दिया।

निर्वाचन

	समाज	प्रधान	मंत्री	
१	आ० स० गुना	श्री शिवसरन गुप्त	श्री शमशेर बहादुर जी	१४-१-५७
२	" आबूरोड	श्री जयनारायण जी गोपालिया	" जेठमल आर्य सिद्धान्त शास्त्री	६- -१-५७
३	" बैंकौक	" सीताराम आर्य	"लक्ष्मी नारायण जी द्विवेदी बी०ए०	
४	शिवगंज	श्री भीखाराम जी	श्री पुखराज शर्मा	१६-१२-५६
५	खंडवा	" डा० रघुनाथ सिंह जी	" कैलाश चन्द्र जी	२३-१२ ५६

मासिक-समाचार

२१ दिसम्बर १९५६ से २० जनवरी ५७ तक

(श्री निरंजन लाल गौतम)

२१ दिसम्बर—भारत में बैंकों की गतिविधियों पर कड़ा नियन्त्रण रखने के लिये रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार देने विषयक वित्त मन्त्री का विधेयक पारित।

—संयुक्त राष्ट्रीय महासभा में पं० नेहरू ने भाषण देते हुये विश्वशान्ति के लिये सैनिक संधियां समाप्त करने पर बल दिया।

२२ दिसम्बर—नेहरू जी तथा कनाड़ा के प्रधान मन्त्री की पांच घंटे तक बात चीत हुई।

—पोर्ट सईद से आंग्ल—फ्रांसीसी फौजें पूर्णतया चली गईं।

२३ दिसम्बर—ओटावा में श्री नेहरू जी ने भाषण करते हुये पश्चिमी राष्ट्रों को सलाह दी कि वे चीन के साथ सौहार्द बढ़ाने का प्रयत्न करें।

—पोर्ट सईद पर मिस्री सेना और पुलिस का अधिकार।

२४ दिसम्बर—श्री पं० नेहरू की इंग्लैंड के प्रधान मन्त्री श्री ईडन से भेंट में मिस्र और हंगरी की समस्याओं पर विचार विनिमय।

—श्री चाऊ एन लाई ने करांची के पत्रकार सम्मेलन में वक्तव्य देते हुये भारत पाकिस्तान की समस्या स्वयं हल करने की सलाह दी।

—नई देहली के डाकखाने में दिन दहाड़े एक फौजी मेजर सैनिक का दुस्साहस पूर्ण डाके का असफल प्रयत्न। डाकू पुलिस गोली का शिकार।

२५ दिसम्बर—पाकिस्तानी यात्री विमान से प्रशिक्षण विमान की बम्बई में टक्कर। पाकिस्तानी यात्री विमान सुरक्षित। प्रशिक्षण विमान के दोनों शिक्षार्थी मारे गये।

—विश्वभर में क्रिसमस समारोहपूर्वक मनाया गया।

—मिस्र ने संयुक्त राष्ट्रीय महासभा से आक्रमणकारियों से (आंग्ल-फ्रांसीसी-इजराइली देशों से) क्षति पूर्ति की मांग की।

२६ दिसम्बर—भारत सरकार ने नियुक्त समिति की मशीनी औजारों का उत्पादन बढ़ाने की सिफारिश को स्वीकार कर लिया।

—विदेशी कम्पनियों के उच्च पदों के पदाधिकारियों की राष्ट्रीयकरण की दिशा में सन्तोष जनक प्रगति हो रही है।

२७ दिसम्बर—दक्षिण सुमात्रा में भी सैनिक विद्रोह भड़क उठा।

—स्वेज नहर की सफाई का कार्य आरम्भ।

—प्रोवीडेंटफंड में कर्मचारियों और मालिकों का हिस्सा बढ़ेगा।

२८ दिसम्बर—श्री पं० नेहरू विदेश यात्रा से लौट कर देहली पहुंच गये। पालम हवाई अड्डे पर स्वागत। श्री आइजन होवर ने भारत आने का

निमन्त्रण स्वीकार कर लिया श्री नेहरू जी की घोषणा।

२९ दिसम्बर—५०१ वस्तुओं के आयात पर ६ महीने के लिये प्रतिबन्ध लगा। ३० करोड़ रुपये की बचत की आशा, प्रमुख प्रतिबन्धित वस्तुयें निम्न प्रकार हैं—फल, सब्जी, सुपारी, शराब, सिगरेट, चुरट, साबुन, पाउडर, सुगन्धित तैल, पैंसिल, कागज (न्यूजप्रिंट को छोड़कर) ऊनी, सूती व रेशमी कपड़े, चीनी के बर्तन, कांच की प्लेट, साइकिल, औषधियां, रंग, तथा कुछ मशीनें आदि।

३० दिसम्बर—नेहरू चाऊ वार्ता का दूसरा दौर शुरू राष्ट्रपति भवन में १ घंटे से अधिक वार्ता। दोनों प्रधान मन्त्री विशेष रेलगाड़ी से नांगल के लिये रवाना।

—देहली में बच्चे उड़ाने वाले दल के विरुद्ध विशेष पुलिस का अभियान।

—आइजन हावर द्वारा पश्चिमी एशिया के लिये सैनिक उपयोग की शर्त पर आर्थिक सहायता देने की नई योजना घोषित।

३१ दिसम्बर—मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री पं० रविशंकर शुक्ल की देहली में देहान्त।

—चाऊ भाखड़ा बान्ध के कार्य से प्रभावित।

१ जनवरी—चाऊ एन लाई का पैकिंग के लिये प्रस्थान।

—इन्दौर में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक प्रारम्भ हुई।

—श्री मैनन की ब्रिटिश विदेश मन्त्री से स्वेज समस्या पर बातचीत।

२ जनवरी—इन्दौर में कांग्रेस अध्यक्ष व अखंड ज्योति का भव्य जलूस लाखों लोगों ने भाग लिया। ६२ वां कांग्रेस अधिवेशन प्रारम्भ।

३ जनवरी—भारत में समाजवादीय समाज स्थापित करना कांग्रेस का लक्ष्य, श्री नेहरू जी की विषय समिति में घोषणा।

—आगामी चुनाव उच्च स्तर पर लड़ने के लिये कार्य समिति का कांग्रेस जनों को आदेश।

४ जनवरी—भारत प्रजातन्त्री विधि से समाजवाद स्थापित करने में समर्थ—कांग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र स्वीकृत।

५ जनवरी—कांग्रेस का ध्येय "समाजवादीय सहकारी स्वराज्य" इन्दौर में कांग्रेस के खुले अधिवेशन में संविधान में संशोधन स्वीकार। समाजवाद जोर जबरदस्ती से स्थापित नहीं किया जायगा।

—१८५७ की शताब्दी १५ वा १६ अगस्त १९५७ को मनाने का भी कांग्रेस का निश्चय।

—मध्यपूर्व के किसी भी देश में अमरीकी सेनाओं का प्रयोग करने की अमरीकन कांग्रेस से श्री आइक की मांग।

६ जनवरी—बाह्य राष्ट्र पश्चिमी एशिया पर सैनिक प्रभुत्व थोपने का प्रयत्न न करें—आइक की मांग पर श्री नेहरू जी की चेतावनी।

७ जनवरी—यक्ष्मा के प्रतिरोध के लिये संगठित रूप से पग उठाने के लिये भारत में हुये अन्तर्राष्ट्रीय यक्ष्मा सम्मेलन में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी का आह्वान।

—आदिवासियों के साथ पूर्ण समानता के व्यवहार की श्री नेहरू जी द्वारा मांडू की सभा में आश्वासन।

८ जनवरी—मध्यप्रदेश के नये मुख्य मन्त्री श्री डा० कैलाशनाथ जी काटजू होंगे—सर्व सम्मति से कांग्रेस दल के नेता निर्वाचित।

—संयुक्तराष्ट्र महासभा में, मैक्सिको, सोवियत संघ, मिश्र, ईरान तथा सूडान ने दक्षिण अफ्रीका की जातीय भेदभाव पूर्ण नीति की निन्दा की।

९ जनवरी—ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री ईडन ने

रुंधे कंठ और भीगी आंखों के साथ अपना त्याग-पत्र दे दिया।

१० जनवरी—श्री मैकमिलन ब्रिटेन के नये प्रधान मन्त्री बने।

११ जनवरी—मास्टर तारासिंह ने अकालियों को निश्चित टिकटें देने के लिये पं० नेहरू का द्वार खटखटाया।

—अमरीका से ६३७५ टन चावल लेकर जहाज बम्बई पहुंचा।

१२ जनवरी—बंगाल में भयंकर तूफान से व्यापक क्षति। अनेक व्यक्तियों तथा पशुओं की जानें गईं।

—निरन्तर वर्षा से बाढ़ का भय।

—संस्कृत विश्व परिषद का भारत सरकार से संस्कृत के अध्ययन के लिये संस्कृत विश्व केन्द्र बनाने का अनुरोध।

१३ जनवरी—विश्व के सब से बड़े हीराकुंड बांध का श्री नेहरू जी ने उद्घाटन किया। यह बांध १५७४८ फीट लम्बा और इसके दोनों तरफ १३ मील लम्बे मिट्टी के बांध हैं। इसका जलाशय २८८ वर्ग मील तक फैला हुआ है। इसकी तट रेखा ४०० मील लम्बी है। इसके जल की मात्रा १० हजार नल कूप या १॥ लाख मामूली कुओं के बराबर है।

१४ जनवरी—वैज्ञानिक विश्व शान्ति में अपना योगदान करें—श्री नेहरू जी का किसान कांग्रेस कलकत्ता में भाषण।

—संयुक्त राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में आणविक पदार्थों को शान्तिपूर्ण उपायों के लिये बरतने का अमरीकी प्रस्ताव।

१५ जनवरी—बिहार में भारी वर्षा और उल्कापात से फसल को भारी हानि। हजारों पशु मरे।

—सिनाई क्षेत्र के दक्षिण भाग से इसराईली सेना हटी। आयात सेना का अधिकार।

१६ जनवरी—भारत काश्मीर के बारे में किसी कुचक्र को सहन नहीं करेगा—कलकत्ता की सभा में पं० नेहरू का भाषण।

—सुरक्षा परिषद में काश्मीर पर विचार प्रारम्भ।

१७ जनवरी—सीरिया के राष्ट्रपति कुव्वत अली का दिल्ली में आगमन, हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत। पं० नेहरू से वार्ता आरम्भ।

—आज़ाद काश्मीर के अध्यक्ष अब्दुल कय्यूम की काश्मीर के लिये युद्ध की धमकी। श्रीनगर में जन विद्रोह होने की कल्पना।

—आइक की मध्य पूर्व एशिया सम्बन्धी नवीन नीति एशिया पर प्रभुत्व विस्तार होगी श्री बुल्गानिन की सम्मति।

१८ जनवरी—सीरिया के राष्ट्रपति श्री कुव्वत अली ने सैनिक गठबन्धनों की तीव्र निन्दा की।

—अरब देशों के बीच शिखर सम्मेलन आरम्भ।

१९ जनवरी—पाकिस्तान पश्चिम का पिछलग्गू, इस्लामी नीति का दावा गलत—सीरियाई विदेश मन्त्री का वक्तव्य।

—इसराइल अपनी सेनायें मिस्र से पूर्णरूप से हटा ले—संयुक्त राष्ट्रीय महासभा में प्रस्ताव भारी बहुमत से पास।

२० जनवरी—आइजन हावर द्वारा अपने पद की शपथ ग्रहण।

—भारत बुरे उद्देश्य के लिये अणुशक्ति का प्रयोग नहीं करेगा श्री पं० नेहरू की ट्राम्बि (बम्बई) में प्रथम प्रतिक्रिया वाहक यन्त्र का उद्घाटन करते हुये घोषणा।

VEGETARIANISM IN GREAT BRITAIN

(Ronald Lightowler Secretary, London Vegetarian Society)

In recent years we have been surprised to learn that a great many Indians are not aware that the practice of vegetarianism exists in this country. It is a good thing that we have come to know this as we can now take steps to make the true facts known and to put the services of the Vegetarian Movement in this country at the disposal of vegetarian visitors from India.

The facts of the case are that vegetarianism and food reform are on the increase in Great Britain and more and more scientists, medical doctors and economists are prepared to maintain that the arguments in favour of a well-balanced vegetarian diet, from all practical points of view, are unanswerable.

In addition, an increasing number of movements, of a philosophic and religious order, which advocate the bloodless diet, are springing up and gaining support here while the orthodox religious sects are declining and losing their prestige and power.

The Vegetarian Movement was first organised here in 1847 when, what is known as the Vegetarian Society, was founded. Our own Society, The London Vegetarian Society, came into existence as a seperate society in 1888. Previous to this it had been known as the London Auxiliary of The Vegetarian Society but, because of the rapid development of the work in the Metropolis it became necessary to have a society, with full executive powers, working in London which covers such a vast area and now has an overall population (in Greater London) of nearly 10 million people.

The Vegetarian Society and The London Vegetarian Society work closely together as a national unit and there are about fifty other local societies working in provincial cities and towns, most of which are affiliated to the National Societies.

In addition there is a widespread Food Reform Movement in connection with which there are several magazines published and numerous societies operating and

emphasising the health benefits of food reform, including the non-flesh diet. Although the Food Reform Movement is not specifically Vegetarian, its general trend is towards Vegetarianism and many people become convinced vegetarians after being introduced to the idea in that way.

During the two world wars the existence of an organised Vegetarian Movement has been effective in getting the Governments, which were in office at the time, to make special provision for the several thousand vegetarians in the country. At the end of the last rationing period there were said to be about 90,000 people holding vegetarian ration books and, since that time, there is reason to believe that the number of practising vegetarians has increased steadily.

In the early days of the movement, vegetarians were regarded as cranks and were laughed at and were told that they could not live without some flesh-meat in their diet. To-day the story is very different. During the war Government spokesmen, doctors and scientific experts frequently told the public over the radio that there was no need to worry if the meat ration was reduced as it was not an essential part of a good diet, provided they got a good supply of dairy produce and plenty of fresh vegetables, fruit and good bread. They told them to look at the thousands of vegetarians in the country who never ate any meat at all and who were perfectly healthy and strong !

Now it is generally recognised that a balanced lacto-vegetarian diet is the best that can be devised from the point of view of health and that, from the economic point of view, its world wide adoption could solve the world's food problem more quickly than any other scheme.

There are now vegetarian shops in most towns througout the country and a great many in London, where there are also several vegetarian restaurants which are always full at lunch time.

There are also many vegetarian Guest Houses all over the country and schools, some where only vegetarian diet is served, others where it is available for those who want it.

All restaurant cars on main line trains served by British Railways undertake to provide a vegetarian lunch or dinner if the terminus from which the train starts, is notified at least a day bafore. Even

when this is not done it is usually possible to obtain a vegetarian meal on request. The same applies to Sea and Air Travel.

We here in London can provide a list of vegetarians who have accommodation in their homes, which is available on request, free of charge, as is a list of vegetarian restaurants in London.

In addition, many thousands of hotels throughout the entire country have said that they will provide vegetarian meals on request. These are all indicated in the Hand-book of the British Travel and Holidays Association.

We ourselves regularly publish a Vegetarian Handbook giving current information regarding all matters of interest to vegetarians.

I hope it may be realised that Vegetarianism is very well established here in Great Britain and that there is no need for any visitors from India to depart from their high ideals and humane standards in the matter of diet although, it is sad to relate, many do so even when a vegetarian meal is alternatively available.

On our part we are only too pleased to do anything we can to help all Indian visitors to remain vegetarian while they do so they are strengthening our cause and helping to hasten the day when vegetarianism shall be the normal diet of everyone here in Britain as we believe it will be ultimately.

A sign of the times here is the fact that it is now quite usual for a non-vegetarian on meeting a vegetarian to say that he or she eats only very little meat and could easily be vegetarian. This is quite a different attitude to that which used to obtain here twenty years ago, when vegetarians were looked upon as either slighty mad or merely cranks. Now, to become a vegetarian in the West is to join the ranks of truly progressive people.

भा र त में
ई सा ई ष ड़ य न्त्र

Regd No. D 51.

चतुरसेन गुप्त द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली-से प्रकाशित।